

Rememberance



SMT. ARUNA JAIN



आशीर्वाद



आचार्य 108
श्री विद्यानन्द जी मुनिराज



कौशल माताजी



स्वास्ति श्री चारुकीर्ति
भट्टारक स्वामी जी



डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े



Justice J.P. Jain & Smt. Pushpa Jain (Father and Mother in Law of Aruna ji)

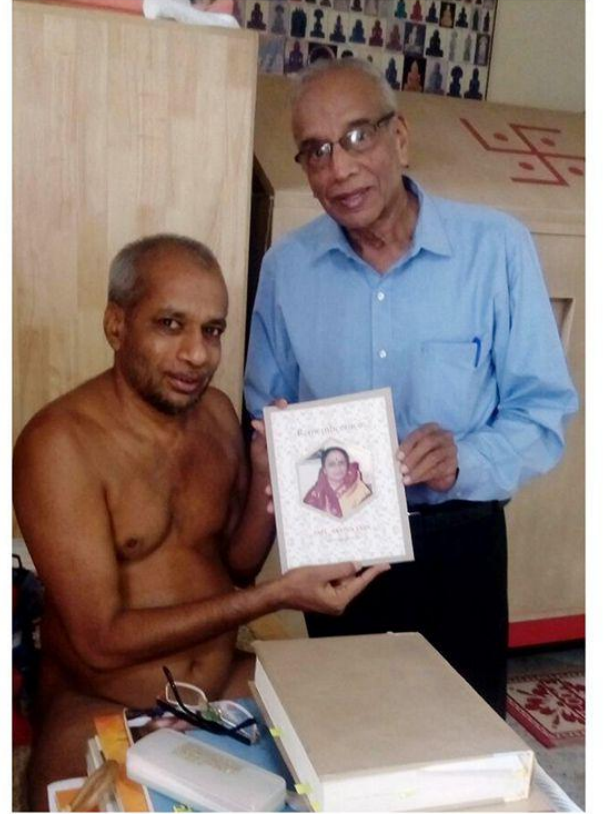


Aruna's Father, Mother, Mause and Mause Ji



श्रीमती अरुणा जैन (धर्मपत्नी न्यायाधिपति नगेन्द्र कुमार जैन)

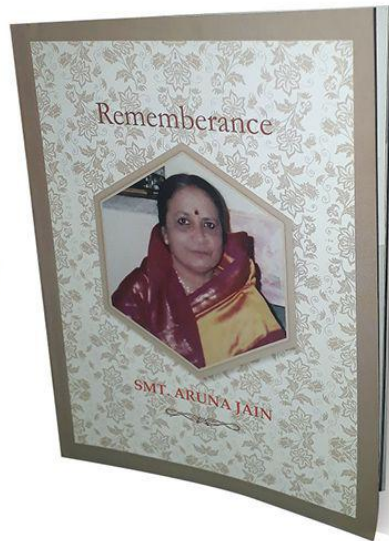
परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
परम पूज्य आचार्य श्री 108 श्रुतसागर जी मुनिराज
द्वारा
सहृदय प्रतिभा श्रीमती अरुणा जैन : एक स्मृति
पुस्तिका का लोकार्पण



निर्मल मन ही
उत्तम तीर्थ हैं।

शुभाशीर्वाद
आचार्य विद्यानन्द
मुनिराज

1/5/2018



मंगल अशीर्वाद
निर्मल आत्मा ही
समयसार हैं।
शेष सब मन का
विकार है।

आचार्य श्रुतसागर मुनि

1/5/2018

अहिंसा परमो धर्मः

सहृदय प्रतिभा श्रीमती अरुणा जैन : एक स्मृति



जन्म : 28 जुलाई, 1945 - स्वर्गवास : 11 जनवरी, 2017

विनयांजलि

न्यायाधिपति नगेन्द्र कुमार जैन

आर-3, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर - 302005
मो. 91-94140 66665 • www.justicenagendrakjain.com

प्रकाशक

एडवोकेट गौरव जैन

मोबाइल : 91-9828016558

INDEX

1.	Justice N.K. Jain	3
2.	Shri M.L. Dhonkariya	10
3.	Subahu Patodiya	11
4.	Justice Gyan Sudha Mishra	12
5.	Mudit Jain & Shri Paliwal Patrika	14
6.	Justice S.S. Kothari	15
7.	Shri Gaurav Jain, Advocate	16
8.	Shri Dhurpat Jain	20
9.	Justice Jasraj Chopra	21
10.	Shri Nishith Jain	22
11.	Justice M. Karpagavinayagam	23
12.	Shri Ajay Kumar Jain	24
13.	Justice P.V. Shetty	25
14.	Smt. Rukmani Jain	26
15.	Swatantra Chintan, Ajmer	26
16.	Justice N.K. Patil	27
17.	Justice S.B. Majage	28
18.	Smt. Meena Ghia	29
19.	Smt. Sneh Jain	30
20.	Smt. Garima Jain	31
21.	Smt. S. Nivedita Reddy	32
22.	Shri L.M. Lodha, Advocate	33
23.	Smt. Sheela Bhargava	35
24.	Shri S.F. Akbar	36
25.	Shri V. Vijayan	37
26.	Smt. S. Noorunnisa Begum	38
27.	Smt. Sushila Jain	39
28.	Shri Ramesh	40
29.	Smt. Sonu Jain	41
30.	Shri Jinesh Jain, Advocate	42
31.	Smt. Asha Singhi	43
32.	Shri Pradeep Kasliwal, Advocate	44
33.	Shri Nitin Jain	45
34.	Tanya Jain	46
35.	Smrati Shesh - Nafa Nuksan	47
36.	Jaipur Explore	48
37.	Glimpse of Photos	49-88



This is a memorial
volume based on
Late Smt. Aruna Jain
(W/o Justice Nagendra Jain)

- It covers the whole life sketch & deeds done by her noble hands.
- It covers the memorial messages of her sweet memory covered & written by the family members & intimate friends.
- It covers a large historical & ancient pictures of the family & society concerned. Moreover, the great saints of Jain Dharma have also blessed the publication.
- It should be regarded as an educational and emotional presentation towards the community of today inside the country and abroad.
- To my mind, it is an example of strengthening the position of woman in the society and it may also inspire the society at large.

With Warm Regards
M.L. Dhonkariya
(Guest Editor)

एक सुन्दर कृति, सहृदय-सहधर्मी जीवनसाथी अरुणा-एक परिचय



पत्नी या पति एक सिक्के की तरह एक दूसरे के लिए पूरक होते हैं। उसके बारे में लिखना आसान नहीं है। पति-पत्नी का रिश्ता एक दूसरे के प्रति आपसी प्रेम, त्याग, आत्मीयता, सामंजस्य, विश्वास व समर्पण का होता है। भावनात्मक व आपसी कर्तव्य का होता है।

मेरे विचार से जिस तरह हर व्यक्ति अपने-अपने ईष्टदेव की पूजा अपनी मर्जी व निष्ठा से करता है, क्योंकि वह उसकी अपनी आस्था का प्रश्न होता है। अतः यह विषय कहने, सुनने, बताने, प्रचार-प्रसार व दिखावे का नहीं होना चाहिए।

मेरी पत्नी अरुणा की मधुर स्मृति में दोस्तों, बहिनों, भाइयों तथा निकटस्थ रिश्तेदारों के उद्गार व कुछ छायाचित्रों के साथ लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है, इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि मैं भी हमारे आपसी सम्बन्ध की कुछ अंतरंग बातें आपसे साझा करूं।

भगवान की कृपा से पूर्व जन्म के कुछ अच्छे कर्मों के कारण मैं भाग्यशाली रहा कि मनुष्य रूप में मेरा जन्म जैन परिवार में हुआ। मैं इसलिए भी सौभाग्यशाली हूँ कि श्रीमती लक्ष्मीदेवी व श्री लक्ष्मीचन्द की सुयोग्य पुत्री अरुणा के साथ मेरा विवाह आगरा में 24 नवम्बर, 1968 को हुआ।

यहां यह भी बताना चाहूंगा कि मेरी ताईजी श्रीमती रतन देवी व बन्ना बुआ (मेरे पिता की कजिन भाभी) व बहिन के माध्यम से इस सम्बन्ध की बातें सन् 1965 में शुरू हुईं। किन्तु जैसा मुझे बाद में मालूम हुआ, अरुणा किसी वकील से शादी नहीं करना चाहती थी, क्योंकि उसकी अजीज दोस्त शमीम का भाई आगरा में वकालत करता था। वह दिनभर काम काज में व्यस्त रहने के कारण अपने परिवार को समय नहीं दे पाता था।

इसी तरह मेरे पिताजी भी चाहते थे कि मैं कुछ कमाने लग जाऊँ। बहरहाल सगाई सन् 1966 में जोधपुर में हुई। इस दौरान हम आपस में कभी नहीं मिले। शादी 24 नवम्बर, 1968 को आगरा में हुई। हम हनीमून के लिए कहीं बाहर नहीं गये। जयपुर में ही अपने मकान के तिकोने कमरे में शादी के बाद 3-4 दिन रुके। उसी दरमियान हमने अपने व परिवार के बारे में आपस में जानकारी की। इसी समय हमने आपसी सोच, पसन्द-नापसन्द के बारे में व परिवार के लोगों के प्रति व्यवहार, जिम्मेदारी व अपने-अपने कर्तव्य के बारे में विस्तृत विचार-विमर्श किया।

शादी के बाद 26 नवम्बर, 1968 को जयपुर में व 30 नवम्बर, 1968 को जोधपुर में रिसेप्शन हुआ। अरुणा संस्कारी व शिक्षित महिला थी इसलिए हम एक दूसरे को बड़ा जल्दी ही समझ गए। यह समझ, सहभागिता फिर आगे 48 वर्षों तक निरन्तर कायम रही। सिर्फ एक बार के अलावा जिसका जिक्र आगे करूंगा।

अरुणा शादी के बाद हमारे नये घर पर आ गई। अपने अच्छे व्यवहार के कारण अम्मा व भाई-बहनों की चहेती बन गई। सुबह जल्दी उठना, बाउजी व अम्मा के चरण स्पर्श करना, उन्हें सुबह की चाय देना, तैयार होकर समय पर नाश्ता आदि तैयार करना उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया। इस वजह से उन्होंने सबके व विशेषकर बाउजी के दिल में जगह बना ली।

अरुणा ने मुझे समझाया कि आप बहुत छोटी उम्र में बैडमिन्टन के अच्छे खिलाड़ी रहे। राजस्थान की तरफ से भी खूब खेले। आप खेल के कोच व खेल के माध्यम से जीवन यापन नहीं करना चाहते थे। आपने टी गार्डन्स, राजकुमारी कोचिंग स्कीम, पटियाला, एजी आफिस जयपुर, इनकम टैक्स विभाग, जोधपुर, बर्मा शैल कम्पनी में नौकरी के लिए मना भी कर दिया। आपने अलवर में श्री फकीरचन्द त्रिभुवन नाथ, एडवोकेट्स व फिर जयपुर में श्री एस.डी. पाण्डे साहब के साथ इनकम टैक्स का काम किया, पर आप इनकम टैक्स की वकालत भी नहीं करना चाहते थे, जबकि बाउजी ने आपको हर तरह के काम करने की इजाजत दी। आप इंजीनियर भी नहीं बन पाये। इसके अलावा शॉर्ट सर्विस कमीशन व जीडी पायलट के लिए भी आई-साईट 6/6 नहीं होने की वजह से आप सलेक्ट नहीं हो पाए। इसलिए अब आपको बिना शार्टकट अपनाए मेहनत और ईमानदारी से वकालत के पेशे में समर्पित होकर काम करना ही होगा। यही विकल्प है तभी बाउजी को सहारा व खुशी के साथ-साथ आनन्द की अनुभूति होगी। तभी से मैंने ईमानदारी के साथ वकालत में रुचि लेना शुरू कर दिया।

उसका यह भी सुझाव था कि हम हर वर्ष बैडमिंटन खेल देखने व घूमने जाया करेंगे। जिससे अपने प्रोफेशनल वर्क के अलावा, अपनी हॉबी भी जीवित रखकर खुश रह सकें। हम शादी के बाद 3-4 वर्ष के अलावा हर वर्ष मैच देखने व घूमने वर्ष 1990 तक जाते रहे और हर बार ऊर्जा से ओतप्रोत होकर लौटे। उनका यह व्यवहार व कृत्य अपने पति के प्रति प्रेम, आदरभाव व उसकी उन्नति चाहने की भावना को दर्शाता है।

अगस्त 1970 में बाबूजी जज बन गये। उसके बाद तो मुझे और जिम्मेदारी से काम करना आवश्यक हो गया। मैंने व साथी उत्तमचन्द जैन ने पावटा में श्री पूनम चन्द जी चौपड़ा, एडवोकेट के मकान में अलग ऑफिस ले लिया। फिर सन् 1968 से वर्ष 1977-78 तक जोधपुर में वकालत की। इसके बाद जयपुर हाईकोर्ट बेंच की पुनः स्थापना होने पर जयपुर आकर वकालत करने लगा।

हम सी-14, एयरफोर्स रोड पर एयरफोर्स ऑफिसर्स मैस के कॉमन वॉल वाले सरकारी मकान में रहते थे। बमबारी की वजह से ज्यादातर लोगों ने अपने घरों में ट्रेंच खुदवाई। मेरे छोटे भाई अशोक ने 2 ट्रेंचेंज हमारे मकान में खोदी। हम दिन-रात में 3-4 बार साईरन की आवाज सुनकर ट्रेंच में आ जाते थे। कभी-कभी रात में भी कुछ समय के लिए रहते थे। लालटेन रखते थे, जबकि उस वक्त गौरव मुश्किल से करीब 6 महिने का रहा होगा। पर अरुणा ने कभी भी बैचेनी, कठिनाई, नर्वसनेस व परेशानी जाहिर नहीं की। यह आचरण उसके धैर्य को दर्शाता है।

सन् 1971 में पाकिस्तान से युद्ध के समय श्रीमती शान्ति मेहता की अगुवाई में श्रीमती मेहरा, श्रीमती टण्डन, श्रीमती विमला कासलीवाल, श्रीमती कान्ती दवे, श्रीमती अरोड़ा, श्रीमती गोयल आदि कई स्वयं सेवी महिलाओं ने, हम लोगों के साथ फौजियों को सुबह 4-5 बजे की गाड़ियों के समय जोधपुर रेलवे स्टेशन पर चाय व नाश्ता देना, आदि का अभियान कई दिनों तक चलाया। इसके बाद बाढ़ के समय पीपाड़ में बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए गये। इससे पावटा में रहने वाली अभिभाषक संघ की सभी महिला सदस्यों में आपसी प्रेम बढ़ने के साथ-साथ उनमें फौजियों के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव देखने को मिला।

सन् 1972-73 में अरुणा को केन्द्रीय विद्यालय में सीनियर टीचर का जॉब मिला व बाद में भी अन्य नौकरियां मिली। परन्तु परिवार और बच्चों की परवरिश को ध्यान में रखते हुए उसने नौकरी नहीं की। यह अरुणा का परिवार के प्रति त्याग के साथ-साथ जिम्मेदारी की भावना का भी परिचायक है।

बाऊजी का एयरफोर्स के सरकारी मकान में अचानक 17 सितम्बर, 1975 को देहान्त हो गया। मकान खाली करने के प्रश्न पर अम्मा से चर्चा की। राय में अरुणा सहयोगी बनी व मृत्यु के 14 वें दिन ही मकान खाली कर, 1 अक्टूबर 1975 से सी-30, पावटा में किराये पर मकान ले लिया और कुछ सामान जयपुर भेज दिया व कुछ सी-15, जालम विलास, हमारे स्वयं के अधूरे मकान के अण्डरग्राउण्ड में रख दिया। जबकि उस समय नियमानुसार सरकारी मकान तीन महिने रखा जा सकता था और सभी माननीय जजों की सहानुभूति भी हमारे परिवार के प्रति थी। न्यायाधिपति श्री जोशी जी व श्री मोदी साहब ने तो यहाँ तक कहा कि आराम से रहो, बाद में खाली कर देना, पर अरुणा ने कहा मकान तो खाली करना ही है, क्यों न अभी हाथ की हाथ समय पर खाली कर दें। यह उसकी हिम्मत, सकारात्मक सोच व फायदा न लेने की प्रवृत्ति को दर्शाता है।

समय निकलता रहा, उस बीच अरुणा ने मेरे छोटे भाई डॉ. अरुण, अशोक व अनिल की शादी की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। उनको उनकी रजामंदी और पसन्द से सुन्दर पार्टनर चुनने में पूर्ण सहयोग दिया। परिणामस्वरूप अरुणा को तीन देवरानियां मिलीं। अरुणा की साथ-साथ रहने की प्रेरणा से ही हम सब भाई आपसी विश्वास, सामंजस्य, सहयोग व आत्मीयता के साथ आज तक अपने-अपने परिवार के साथ आर-3, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर में रह रहे हैं। यह अरुणा की बड़ी सोच, समझदारी व परिपक्वता को दर्शाता है।

अरुणा ने मेरे साथ बार कौंसिल द्वारा आयोजित विभिन्न सेमिनारों में भाग लिया। जैसे हैदराबाद, विशाखापट्टनम, जयपुर, जोधपुर, आगरा व आखिरी में बेंगलोर, जहाँ श्री वी.एस. दवे व कान्ता भाभी भी हमारे साथ गये। उनके प्रेम व मिलनसारिता के कारण अरुणा को यह यात्रा सबसे सुखद व यादगार लगी।

मैं प्रभु की कृपा से सन् 1990 में राजस्थान हाईकोर्ट का जज बन गया व मुझे जोधपुर पीठ में कार्य दिया गया। अरुणा ने कहा कि जयपुर व जोधपुर कहीं भी रहो, आपको तो न्याय करना है। मेहनत कर बाउजी की तरह नाम रोशन करना है। मैंने जोधपुर में न्यायमूर्ति का कार्य 20 जुलाई, 1990 से 1996 तक करीब 6 वर्ष किया।

अरुणा ने हमारी बेटी गरिमा की शादी तय होने पर जोधपुर में शादी की तैयारी आरम्भ कर दी। परन्तु शादी के 15 दिन पहले मुझे बिना बताये मेरा ट्रांसफर जयपुर कर दिया गया। मैंने बताया कि सारी तैयारी जोधपुर में कर ली है, अब जयपुर जाना मुनासिब नहीं है। एक सख्त पत्र भी लिखा, परन्तु ट्रांसफर रोकने की जगह माननीय मुख्य न्यायाधीश साहब ने मुझे 15 दिन के लिए जयपुर बेंच में ही बिठाया। मैं शादी के समय भी बेंच में बैठा व सिर्फ 3 दिन की छुट्टी ली। वैसे भी मैंने 6 साल में कभी भी जयपुर बेंच में बैठने के लिए कोई आग्रह नहीं किया। हाँ गरिमा की शादी के बाद मेरा ट्रांसफर जयपुर बेंच में ही कर दिया गया, यहाँ मैंने करीब 1 साल 3 महिने कार्य किया।

मेरे मद्रास ट्रांसफर होने की खबर जयपुर में 14 नवम्बर, 1997 को मिली। जबकि मैं हमारे बेटे गौरव की शादी की खरीददारी के सिलसिले में मद्रास, बेंगलोर व अहमदाबाद गया हुआ था। मैं 16 नवम्बर को जयपुर आया तो 17 नवम्बर को जोधपुर में एक 5 जजेज् बेंच के सुरक्षित फ़ैसले सुनाने के लिए जोधपुर जाकर बैठना था। फ़ैसला सुनाकर 18 नवम्बर को जयपुर आया व 19 नवम्बर को मद्रास उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति के रूप में शपथ ली। उस समय मैं वहा न्यायाधीशों की वरिष्ठता के क्रम में छठे स्थान पर था, जबकि मैं राजस्थान हाईकोर्ट में वरिष्ठता क्रम दो पर था। मैंने लाईफ़ का फ़सट्रेशन सन् 1958 में ही बर्दाश्त कर लिया था, जब मेरा व मेरे साथी बृजेश माथुर का कोआलालाम्पुर जाने के लिए भारतीय बैडमिंटन की जूनियर टीम में राजनीति की वजह से चयन नहीं हुआ। हम कोआलालाम्पुर नहीं जा पाए। इसके बाद हांगकांग व रूस भी किन्हीं कारणों से जाना नहीं हो पाया। रूस मेरी जगह श्री पानाचन्द जी गए, मन में एक टीस सी रही कि विदेश नहीं जा पाए।

अरुणा ने भी इस अपमान को बर्दाश्त किया लेकिन किसी की आचोलना और शिकायत नहीं की। उपरोक्त अपमान व तकलीफों के बावजूद अरुणा विचलित और परेशान नहीं हुई उस समय अरुणा ने बिना विचलित हुए शांति बनाए रखी, धैर्य से प्रत्येक क्षण मेरा मनोबल बनाए रखने में मुझे सहयोग दिया।

मद्रास के लगभग 4 साल के कार्यकाल में सन् 1997 से 2001 के दौरान मैं वहाँ करीब दो वर्ष चीफ़ जस्टिस रहा। इस बीच अरुणा ने श्री नायडू से हिन्दी से तमिल सीखने की एक किताब मंगाई और मुख्य-मुख्य बातें सीखी। नौकरों से थोड़ा तमिल बोलने व समझने लगी। साथ ही श्री अरूल, गृह सहायक से कम्प्यूटर सीखना शुरू किया, उसके नोट्स भी बनाए। अरुणा ने मद्रास

में शंकर नेत्रालय में आंखों के ऑपरेशन आदि में सहयोग दिया। यह उसके जनकल्याण करने के स्वभाव को दर्शाता है।

इसके बाद मेरा ट्रांसफर अगस्त 2001 में कर्नाटक हो गया। मैं वहाँ तीन साल चीफ जस्टिस रहा। 19 अक्टूबर, 2004 को कर्नाटक से रिटायरमेंट के बाद, मैं शिमला में हिमाचल मानव अधिकार आयोग का चैयरमैन रहा साथ ही वहाँ के लोकायुक्त का काम भी देखा। उसके बाद जयपुर में 16 जुलाई, 2005 से 15 जुलाई, 2010 तक राजस्थान मानव अधिकार आयोग का चैयरमैन रहा।

अरुणा ने जयपुर में भी श्रीमती डॉ. कपूर, अध्यक्ष, कैंसर संस्था “कोशिश”, जितेन्द्र अरोड़ा की संस्था “प्रयास” जो मेंटली रिटार्डेड बच्चों की देखभाल व असहाय बच्चों को पढ़ाने वाली संस्था आदि से जुड़कर समाज सेवा का कार्य किया। यह उसकी सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति निष्ठा को दर्शाता है।

अरुणा शान्त स्वभाव, समय की पाबन्द, स्वाभिमानी व अनुशासन प्रिय महिला थी। घर को सुव्यवस्थित रखने में निपुण थी। नसीहत देने की जगह उन बातों को स्वयं अमल करने में तत्पर रहती थीं। सभी से समभाव रखती थी। सभी जगह, सभी ब्रदर/सिस्टर्स, जजेज, स्टॉफ व कर्मचारीगण से उसका सरल, सौम्य व आत्मीयता का व्यवहार रहा।

अपने वैवाहिक जीवन में सिर्फ एक बार अरुणा की नाराजगी का एक उदाहरण भी आपसे साझा कर रहा हूँ। सन् 1984 में बैडमिन्टन के इन्टरनेशनल मैच, जिसमें वर्ल्ड चैम्पियन अर्लिन कॉपस, कोबेरो खेलने आए थे, देखने बम्बई गया व अपने साले अजय साहब, डीईटी के यहां रुका। बम्बई में सुधा पत्नी आर.एम.लोढा, एडवोकेट (जो बाद में उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने) डिलीवरी की वजह से अपनी मम्मी के घर थी। मैं उनसे मिलने गया। मैंने उनसे कहा कि मैं यू.एस.ए. जा रहा हूँ, क्योंकि यू.एस.एस का वीजा और एक्सचेंज मिल गया है। जो उस वक्त मुश्किल से मिलता था। उन्होंने कहा चले जाओ, पर उनको नहीं मालूम था, कि मैं घर पर कहकर नहीं आया। मैं करीब 62 दिन के बाद यू.एस.ए., कनाडा, यूरोप घूमकर लौटा। इस पर अरुणा की नाराजगी व गुस्सा देखने लायक था। गुस्सा होना स्वाभाविक भी था। वह खासतौर से इस बात पर नाराज थी कि श्रीमती ठोलिया, सुधा जी व अजय को तो सबकुछ मालूम था, पर उसे वहीं से फोन पर बताया गया कि मैं न्यूयार्क में हूँ। उसने मेरे लौटकर आने पर मेरा पासपोर्ट जब्त कर लिया, कि मुझे बताकर क्यों नहीं गए। बहुत समझाने, मनाने व कान पकड़ कर अपनी गलती मानने पर ही, उसकी नाराजगी दूर हो पाई। उसके बाद हम दोनों ने साथ-साथ सिंगापुर, नेपाल, भूटान, इंग्लैण्ड, यू.के, श्रीलंका आदि देशों की यात्रा की, जबकि वह विदेश जाने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं लेती थी।

बैंगलोर में 'जजेजू की सोसायटी' ने ज्यूडिशियल ले आउट में विभिन्न क्षेत्रफलों के प्लॉट्स करीब-करीब सभी जजों को दिए, उन्होंने लिए। सोसायटी ने मुझे भी ऑफर दिया। मैं भी वहां की सोसायटी से लेने का हकदार था। इसके बावजूद मैंने प्लॉट नहीं लिया। अरुणा को न्यायमूर्ति अशोक सी. कबीन व न्यायमूर्ति विजय एस. शिवायत ने भी प्लॉट लेने के लिए कहा, कि ले लो बच्चों के काम आ जाएगा। सभी लोग समझते थे कि मैंने भी प्लॉट किसी और के नाम से ले लिया होगा। एक केस में, न्यायिक आदेश में मैंने यह बात स्पष्ट की कि मैंने प्लॉट लेने की योग्यता होने के बावजूद भी प्लॉट नहीं लिया है। मेरे इस फैसले पर अरुणा का पूर्ण संतोष रहा। अरुणा की यह विशेषता उसका संतोषी स्वभाव व अपरिगृही का गुण दर्शाती है।

यहाँ यह भी बताना चाहूँगा कि अरुणा बहुत सौभाग्यशाली रही कि उसने कई आचार्यों, सर्वश्री आचार्य विद्यानन्दजी, विद्या सागर जी, स्वामी चारुकीर्ति जी, स्वामी मुडब्रदी जी, हुमचा के भट्टारक, मुनि सौरभ सागर जी (अब भट्टारक तितारा) व अन्य मठों के भट्टारकों से व कौशल बहन जी (अब माताजी), द्वारा दी गई धर्म देशना व उपदेशों को न केवल सुना बल्कि प्रवचनों को उस वक्त टेप कर अपनी कॉपी में स्वयं, आशा सिधंवी, स्नेह जैन आदि के साथ लिखती थीं। सुपाश्वरमति माताजी, सृष्टिभूषण माताजी, कांचीपुरम के शंकराचार्य, स्वामी जयेन्द्र सरस्वती व विजेन्द्र जी, पट्टुपति के साईबाबा, डॉ. वीरेन्द्र हैगड़े व कई संतो के अलावा राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम, श्रीमती प्रतिभा पाटिल, उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह जी शेखावत, कई उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, विभिन्न उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधिपति व न्यायाधिपतिगण, उच्चाधिकारीगण श्रद्धेय तेजकरण जी डांडिया व अन्य प्रबुद्ध व्यक्तियों आदि से मिलने व उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का मौका भी मिला।

अरुणा देश के सुप्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन करने में भी भाग्यशाली रही। श्रीमहावीर जी हम हर साल जाते थे, जो ज्यादातर भादवे के महिने व कुछ खास दिनों में जन्मदिन या विवाह की वर्षगांठ आदि के अवसर होते थे। उसने जैन धर्म के सिद्धान्तों की सदैव मनोयोग से अनुपालना की।

मेरे चचेरे भाई मित्रसेन जी व अरुणा की प्रबल इच्छा थी कि साल 2017 में मेरे पिताजी न्यायमूर्ति जे.पी. जैन साहब की जन्म शताब्दी पर उनकी स्मृति में कुछ अच्छे कामों के साथ-साथ उनके जीवन मूल्यों को रेखांकित करने वाली पुस्तक प्रकाशित की जाये। 11 जनवरी, 2017 को ही अरुणा की अकस्मात् मृत्यु हो जाने से यद्यपि वह देख नहीं सकी, परन्तु हमने उसकी एवं मित्रु भाईसाहब की इच्छा पूरी की।

अरुणा की सोच थी कि जैसा व्यवहार कोई अपने साथ करवाना चाहता है वैसा ही व्यवहार वह दूसरों के साथ करे। उसके अनुसार अपने कर्तव्य ईमानदारी से करना ही धर्म का

वास्तविक स्वरूप है। प्राणी मात्र के प्रति संवेदनशीलता ही मानवता है। वैसे भगवान ने सभी महिलाओं को पुरुष से ज्यादा गुण दिए हैं। जैसे प्रेम, दया, त्याग, ममता, संयम, सहनशीलता, सहयोग आदि। इन गुणों के अतिरिक्त नारी को सुव्यस्थित तरीके से घर चलाने व खुशी से समाज में रहकर जीवन यापन करने की कला भी दी है। महिला भगवान की सुन्दरतम कृति है। सच कहा गया है कि औरत ही घर को स्वर्ग बनाती है।

अरुणा सहज, सरल व सहृदय थी। उसमें सुनने व समझने के मानवीय गुणों को मैंने महसूस किया। कहना व लिखना बहुत मुश्किल है। मेरे अनुसार अरुणा ने सब पर विश्वास किया। घर की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। अरुणा ने जीवन के उद्देश्यों को अच्छी तरह समझा व उन पर आचरण कर अपना सुखमय जीवन व्यतीत किया। स्वयं के माता-पिता, अपने सास-ससुर व परिवारजन का नाम रोशन किया। मेरे हिसाब से वह एक सुयोग्य पुत्री, बहू, पत्नी व माँ साबित हुई। उसको नमन्।

अरुणा ने सकारात्मक सोच रखकर, मानवीय गुण अपने बच्चों के साथ अपने पौत्र मुदित व पौत्री तान्या एवं परिवारजनों में भी विकसित किए। आनन्द के साथ अपना जीवन व्यतीत किया। भगवान अरुणा की आत्मा को शांति प्रदान करें। इस लघु पुस्तिका में कई माननीय न्यायाधिपतिगण व जाने-माने व्यक्ति, सहयोगी साथियों ने अरुणा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने उद्गार उसकी स्मृति में प्रस्तुत किये हैं। मैं उन का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही डॉ. चन्द्रिका प्रसाद, एम.एल. धोंकरिया, के. के. मित्तल, तरूण, राजू ग्राफिकस आर्ट के संदीप शाह, तीरथ सिंह का इस सुन्दर पुस्तक की प्रस्तुति के लिए धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

हम सभी जानते हैं कि जाने वाले को कुछ भी फर्क नहीं पड़ता कि उसके बारे में क्या होता है व कोई क्या कह रहा है? अरुणा की स्मृति में कुछ महानुभावों के उद्गारों के साथ पुराने छायाचित्र व मेरे पिताश्री के जन्म शताब्दी समारोह के कुछ छायाचित्र इस लघु पुस्तिका में प्रकाशित कर रहे हैं। यह हमारे स्वयं की आत्म-संतुष्टि हेतु किया गया है।

हमारी भतीजी डॉली (नूतन), श्रीमती नेमीचन्द जी (सासु माँ-डॉ. वीना व डॉ. गौतम), कौशल भाभी (स्व. राजेन्द्र भाई), भाईसाहब डॉ. टी.पी. जैन जो फरवरी-मार्च, 2018 से हमारे बीच नहीं रहे। बिना उनके यह पुस्तिका निकाल रहे हैं। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। समय के साथ-साथ उस वक्त के साथी, सहयोगी एवं कई महानुभाव आज हमारे बीच नहीं हैं, उन सभी को मैं सादर नमन् करता हूँ।

यह पुस्तक केवल स्मृति योग्य ही नहीं है, इस पुस्तक से हम सभी को कुछ न कुछ प्रेरणा मिलेगी। पुस्तक सन्देश देती है कि 'चारित्तं खलु धम्मो' (आचार्य कुन्द कुन्द)। जय जिनेन्द्र!

एन.के.जैन

जैन समाज-सेवा में अग्रणी स्व. अरुणा जैन का प्रेरणास्पद व्यक्तित्व

ईश्वर की संरचना में स्त्री-पुरुषों का युगल सम्पूर्णता का परिचायक है। यह कहना असंभव है कि संसार पटल पर कौन पहले आया और कौन पहले विदा हुआ? संसार में स्मृतियाँ ही शेष रह पाती हैं। दो बातें महत्वपूर्ण हैं एक त्याग और दूसरा व्यवहार। राजस्थान के वृहद जैन समाज में स्व. श्रीमती अरुणा जैन अपनी मधुर स्मृतियाँ छोड़कर 11 जनवरी, 2017 को विदा हो गई। उनका प्यार भुलाया नहीं जा सकता है। अरुणा जैन स्वभाव से ही इतनी सहज और विनम्र रहीं कि उन्होंने अपने पति श्रद्धेय जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन को फॉलोअप किया। जब एन.के. जैन न्यायिक सेवा में अपने जन्म स्थान अलवर से काफी दूरस्थ रहे तब भी वे उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलती रहीं। एन. के. जैन ने मुख्य न्यायाधीश बनकर मद्रास एवं कर्नाटक हाईकोर्ट में शिरकत की तथा बड़ी संख्या में जनता के विवादों का निपटारा किया एवं घर पर जरूरत से ज्यादा असंलग्नता दर्शायी तब भी धर्मपत्नी अरुणा जैन ने बजाए एतराज उठाने के सहज एवं सद्भावनापूर्ण सहयोग प्रदान किया। एन. के. जैन साहब का परिवार न्याय और धर्म के संस्कारों से अभिभूत इसीलिए था कि उनके पिता श्री स्व. जस्टिस जे.पी. जैन भी सर्वोच्च न्यायिक सेवा का परिचय दे पाये थे। श्रीमती अरुणा जैन ने एक पुत्र एवं एक पुत्री को जन्म दिया तथा उच्च स्तरीय शिक्षा एवं संस्कारों से पल्लवित किया। उनका प्रतिभावान पुत्र गौरव एडवोकेट है और उनकी पत्नी सोनू शिक्षा में अग्रज स्थान प्राप्त है। पुत्री गरिमा (धर्मपत्नी नितिन) समाजरत्न है। एक पौत्र भी काफी मनोहारी है और पढ़ाई में कुशाग्र है। शेष इतना बड़ा परिवार है कि नामों का उल्लेख करना काफी मुश्किल है। स्व. श्रीमती अरुणा जैन राजस्थान में महावीर जी तीर्थ की नियमित दर्शनार्थी एवं भक्त रही हैं। वे महावीर जी से सेवा का वरदान ही मांगती रही है। जब एन.के. जैन साहब महावीर जी कमेटी के चेयरमैन (तीन साल तक) रहे तो उन्हें अनेक व्यावहारिक सुझाव पेश करती रहीं तथा आग्रह करती रहीं कि महावीरजी तीर्थ पर वो काम करके बतलाएं जो भारतभर से आने वाले श्रद्धालुओं एवं दर्शनार्थियों को राहत प्रदान कर सके। जो भी महावीरजी तीर्थ में आवे वह आवास,

भोजन, वाहन, औषधि एवं गाइडेंस प्राप्त कर पाये तथा महावीर जी तीर्थ की कुशल व्यवस्था की स्मृति में धारण कर साथ ले जावे। सारी व्यवस्थाएं ऑनलाईन भी शुरू करवाई गईं। जब महावीर जी का लक्ष्मी वार्षिक मेला लगा तो एन.के. जैन (चेयरमैन) को रथयात्रा में समग्र जैन समाज का प्रतिनिधित्व करना पड़ा। रथ में एस.डी. एम. एवं चेयरपर्सन साथ-साथ बैठ पाये। श्रीमती अरुणा ने दोनों को ही हार्दिक धन्यवाद अर्पित किया तथा भगवान महावीर से क्षेत्र की एवं राजस्थान की उन्नति के लिए णमोकार मंत्र के माध्यम से अनुनय प्रार्थना की। श्रीमती अरुणा जैन राजस्थान जैन समाज की धर्मसेवी प्रतिभा रही हैं तथा अनेक महिला विकास की योजनाओं को सम्बल प्रदान कर आगे बढ़ाया है।

वस्तुतः एन.के. जैन स्वयं भी स्वीकार करते हैं कि उनकी उन्नति में निर्बाध सहयोग उन्हें उनकी अर्द्धांगिनी से प्राप्त हुआ है तथा उसी त्याग का परिणाम है कि एन.के. जैन राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के न्यायाधीश, विधि विशेषज्ञ, मानवसेवा स्रोत रहे हैं। राजस्थान सरकार ने भी उक्त विशेषताओं के कारण ही जैन साहब को हिमाचल प्रदेश के चेयरमैन के बाद राजस्थान राज्य मानव अधिकार आयोग में चेयरमैन नियुक्त किया। आयोग में कार्यरत रहकर जो असाधारण उपलब्धियाँ श्री जैन साहब ने प्राप्त की हैं उसमें भी अरुणा जी की भावनात्मकता, परोपकारिता एवं विनम्रता का समुचित योगदान रहा है। कहना पड़ेगा कि स्व. अरुणा जी कुशल गृहणि, अन्नपूर्णा, संवेदनशील धर्मपत्नी, समाज उद्धारक, समाजसेवी, महावीर जी की आस्थावान भक्त व अनेक कल्याणकारी प्रवृत्तियों के प्रति समर्पित रही हैं।

स्व. अरुणा जी जैन का जीवन जयपुर के जैन समाज एवं महिला वर्ग के लिए प्रेरणास्पद बना रहेगा। उनकी कीर्ति हर दिन हमारी स्मृति में बनी रहेगी। हम उनकी त्याग एवं करुणामयी शिक्षाओं को आत्मसात करते रहेंगे - ऐसा हमारा आत्म-निवेदन है।

'णमोकार मंत्र' की कृपा से दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त होगी। नमन



एम. एल. धोंकरिया,
- साभार समाचार जगत, जयपुर
दिनांक 19 जनवरी, 2017

अरुणा जी का परिचय एवं व्यक्तित्व



निर्देशानुसार मैं सुभाऊ आपको अरुणा जी का संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ । स्व. श्रीमती अरुणा जैन का जन्म आगरा के एक प्रतिष्ठित एवं सम्भ्रांत परिवार में श्रीमती लक्ष्मी देवी व स्व. श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन इंजीनियर के यहाँ 28 जुलाई, 1945 को हुआ था । उन्होंने एम.ए. हिन्दी, एम. ए. सोसियोलोजी एवं बी.एड तक की शिक्षा आगरा से प्राप्त की । श्रीमती अरुणा जी अपने पाँच भाई और दो बहिनों में सबसे बड़ी थीं । अरुणा जी का विवाह श्री नगोन्द्रकुमार जी जैन के साथ 24 नवम्बर, 1968 को आगरा में सम्पन्न हुआ । अरुणा जी के ससुर न्यायमूर्ति स्व. श्री जगदीश प्रसाद जी जैन एवं सास स्व. श्रीमती पुष्पा देवी जी थे, जो सदा उनके प्रेरणास्रोत रहे । न्यायमूर्ति स्व. श्री जे.पी. जैन साहब का इन पर अत्यधिक स्नेह एवं आशीर्वाद अपनी मृत्यु तक 17 सितम्बर, 1975 रहा । उन्हीं के आशीर्वाद एवं सासू माँ के मार्गदर्शन से श्रीमती अरुणा जी ने परिवार की बड़ी पुत्रवधु होने के समस्त कर्तव्य निष्ठा पूर्वक निभाये एवं अपनी सूझबूझ एवं व्यवहार कुशलता से अपने पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखा और घर परिवार एवं समाज से सम्बन्धित कार्यों के प्रति निर्णय लेने में सदैव तत्पर रहीं और अपनी विनयशीलता हमेशा बनाये रखी, जोकि आज के समाज में एक बहुत प्रेरणादायक उदाहरण है ।

श्रीमती अरुणा जी अपने पति के लिये जीवन पर्यन्त अति सौभाग्यशाली सिद्ध रहीं । इनके पति श्री नगोन्द्रकुमार जी अत्यन्त उच्च संवैधानिक पदों पर प्रतिष्ठित रहे । इसके बावजूद इनका जीवन अत्यन्त ही सादगीपूर्ण रहा और इनके आचरण में कभी अभिमान का लेशमात्र भी अंश नहीं था । श्रीमती अरुणा जी अत्यन्त धर्मपरायण, विवेकशील, विचारशील, संतोषी एवं करूणामयी मूर्ति थी ।

श्रीमती अरुणा जी अपने पीछे देवर-देवरानियों सहित पुत्र श्री गौरव एडवोकेट व पुत्रवधु श्रीमती सोनू एवं पुत्री गरिमा-नीतिनजी व बच्चों सहित एक भरापूरा खुशहाल परिवार छोड़ कर गई है ।

हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह ऐसी विशुद्ध एवं पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करें एवं अपनी शरण में स्थान दें ।

परिवार की इस दुःख की घड़ी में देश-विदेश से कई आत्मीयतापूर्ण संवेदना संदेश प्राप्त हुए । केरल के राज्यपाल, न्यायमूर्ति सदाशिवम् साहब, पूर्व मुख्यमंत्री कर्नाटक, श्री धर्मसिंह जी साहब, गुजरात एवं राजस्थान के राज्यपाल न्यायमूर्ति अंशुमान सिंह, राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे, उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं न्यायधीशों ने भी अपनी संवेदना प्रेषित की । समय को देखते हुए उनको पढ़ना मुनासिब नहीं है । सभी सम्मानीय बंधुओं, महानुभावों, जो 11 जनवरी, 2017 एवं आज संवेदना व्यक्त करने पधारे सभी का परिवारजन सहृदय से आभार व्यक्त करते हैं ।

विशेष रूप से डॉ. मनोहर गुप्ता, डॉ. चन्द्रशेखर चतुर्वेदी, डॉ. अरविन्द गुप्ता, डॉ. ज्ञानचन्द जैन, डॉ. राघव जौहरी, डॉ. एम. एल. टेलर, डॉ. छाया बंसल, सिस्टर वलसम्मा, सुनीता, दुर्गा आदि का भी आभार प्रकट करते हैं ।

परिवार की सूचना के अनुसार आज के बाद महिलाओं व पुरूषों की बैठक उठा दी है । शाम को 7-8 बजे निज निवास आर-3, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-5 पर णमोकार मंत्र का पाठ होगा ।

शुक्रवार, दिनांक 13-01-2017

प्रातः 10 बजे

सुभाऊ कुमार पाटोदी
नसियां भट्टारक जी, जयपुर
कार्यरत, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी

A Lady of Values Enriching Indian culture



Dear Brother Justice Jain,

Please find my memoirs by way of my tribute to Smt Aruna Jain which is as follows : “Human relationships ultimately fade into memory is a hard truth and stark reality; yet it gives us rude shock and a shell shocked experience when we are really confronted with it. This is what happened when I first came to know that my very Dear Bhabhi Aruna is no more with us as God has chosen her to be with Him in the heavenly abode .

No wonder ! Good people and wonderful souls are always in demand in this world and on ethereal planet as well, I know for sure from my experience and close association with her that Aruna Bhabhi -the beloved wife of Brother Justice N.K. Jain was truly a great human being who I cannot recollect was lacking in any of the virtues or qualities that an ideal woman could possess. She was affectionate , extremely caring , devoted wife and a doting mother , yet with the right balance of possessing the sense of disciplining the children with the right values of Indian culture and ethos. But beyond her immediate personal boundaries, she was truly a large hearted person who had tremendous capacity to shower affection, protection and care on people who came in contact with her which reassured the person in touch that here was a person who could be completely trusted for all the care and emotional support in the most trying times.

While penning down my thoughts and memoirs of the beloved soul Aruna Bhabhi in order to pay my heartfelt tributes to her, I recollect that I met her for the first time at Jodhpur on reaching there when I was to be sworn in as a Judge of the Raj. HC on my transfer from Patna High Court only after a fortnight of my elevation as a Judge under the then newly introduced transfer policy for the High Court Judges. Until then , I was used to living in the extremely secured precincts of my home in Delhi with my family and extended family in Patna at frequent intervals due to my professional engagements , which was to be replaced by a lonely stay at an altogether new city without any social or even remote relative with just my very young primary school going daughter and my professional court engagements as my immediate family could not have joined to live with me due to various compelling reasons. Obviously, this had made me extremely anxious about the time that I was going to spend in Rajasthan.

But when I reminisce and recollect the faces and count on persons who made me feel so homely comfortable and special during my stay in Rajasthan , image of Aruna Bhabhi with her affectionate smile showering sisterly affection and motherly reassurance is vivid in the forefront of my memory lane. I recollect that Aruna Bhabhi and her family were the first taste of family flavour at Jodhpur in Rajasthan which came as a substitute of what I had left behind in Patna and Delhi as my amazing family which God had blessed me with. On reaching Jodhpur, I had just checked into the High Court Guest House in the April of 1994

when I met Bhabhi Aruna Ji with Brother Jain for the first time who instantly instilled a huge sense of security in me which the entire officialdom around a judge's life could not have provided to be able to feel that I was not away from home at all as I was blessed around with a caring family of Aruna Bhabhi as my next door neighbour at least for sometime until I left Jodhpur to be again near them in my adjoining official residence at Jaipur. I was fortunate to be in the midst of family like members again until Aruna Bhabhi and Brother Justice Jain left for Madras on transfer and later to take over as Chief Justice.

On the very next day of my arrival at Jodhpur when I went for dinner at Brother Justice Jain and Aruna Bhabhi's place, I not only had a wonderful taste of homemade food and realise Aruna Bhabhi's culinary skills but could also instantly understand why Rajasthan is known for its exemplary hospitality along with its grandeur and valour. The sobriety, grace, the genuine affectionate expression and simplicity with dignity which I could notice in Aruna Bhabhi's personality indeed was enough to charm anyone and I felt fortunate to have come in contact with her in whom I found a warm friend, understanding sister with, of course, an ideal wife and a mother with her two well brought up children adding fragrance to the living and caring family; and why not as the children very often are a reflection of what the mother has made them to be. My memory bank is full of pleasant imprints of Aruna Bhabhi's comforting dispositions and words specially when I would often relate my distress to her about living alone without my family at Jaipur and her words that I should never feel alone as she and her family were there on whom I could count on always and anytime. I remember no special food at their place could ever be tasted without my having a share in it as Aruna Bhabhi would ensure that it has been delivered to me. Above all, my little daughter had a second home just next to hers.

In fact I've always felt that the virtues of a human being specially in the case of a woman who has not been in an orthodox career path but has contributed tremendously in an abstract ways, it's always difficult to describe her traits, qualities, attributes which are clearly matters of abstract form and can only be felt or experienced as they do not have a material form to be described in words. This is the incapacity that I feel exactly at this moment specially when I write about Aruna Bhabhi which could only have been felt by anyone who interacted with her. I can only sum up by saying that she was truly an example of a woman who could be looked upon as a role model for the women of today to inspire and lead them to a road map to happiness along with their professional achievements. I truly believe that Aruna Bhabhi's personal virtues if synthesised with modern women's professional attributes would surely be leading to the path of a happy family and in turn an ideal social order.

I pay my heartfelt and respectful tributes to Smt Aruna Jain for her contribution for restating and highlighting the family values and in turn enriching Indian culture. “

Justice Gyansudha Mishra
Former Judge Supreme Court of India

Tribute by grand son Mudit in Condolence Meeting
at Bhattarak Ji Ki Nasiya, Jaipur on 13th January 2017
3rd day of the death.

Jai Jinendra



It is a very sad moment for me to stand in front of distinguished seniors to express my feelings for my grandmother who passed away on 11th, January, 2017.

My dadi was very nice and Kind hearted to all our family members and everyone. She helped and guided all of us. She was a devoted, humble and polite woman. Being the wife of renowned person, she always remained down to earth, She was taking care of me and my sister even when she was not well. she was a good wife and also loving and caring mother to her children and a caring grandmother to me and my sister. She was very keen to learn new things, and learned computer at the age of 55. I will always miss her for her lovely food items specially for me and my sister Tanya. She was a loving and caring Nani to Tanmay and Aaryan. She used to teach us moral values and helped us to inculcate them with in us. Dadi, I assure you that I will carry out your teachings throughout my life. दादी माँ हम आपको हमेशा याद रखेंगे । मुझे और मेरे परिवारजनों को आपकी याद आयेगी । You will always remain in our hearts. दादी आपने जो हमें बातें बताई थीं, सिखलाई थी वे हमेशा हमें प्रेरणा देती रहेगी । भगवान आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें ।

प्रांगण में उपस्थित आप सभी इस दुःख की घड़ी में संवेदना करने पधारे, अपना समय दिया एवं आप सभी ने मुझे ध्यान से सुना, उसके लिए धन्यवाद !

Mudit Jain

13th Jan., 2017

शोक समाचार



स्वर्गीया श्रीमती अरुणा जैन धर्मपत्नी जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन, राजस्थान के वृहद जैन समाज में अपनी मधुर स्मृतियाँ छोड़कर 11 जनवरी, 2017 को विदा हो गईं । श्रीमती अरुणा जैन स्वभाव से सहज एवं विनम्र थीं एवं राजस्थान जैन समाज की धर्मसेवी प्रतिभा रही हैं तथा उन्होंने अनेक महिला विकास की योजनाओं को सम्बल प्रदान कर आगे बढ़ाया है । श्रीमती अरुणा जैन का जन्म आगरा के एक प्रतिष्ठित परिवार में श्री लक्ष्मी चन्द जैन (इन्जीनियर) के यहाँ पर बड़ी पुत्री के रूप में हुआ था । उच्च शिक्षा प्राप्त श्रीमती अरुणा जैन बचपन से ही अत्यन्त मेधावी एवं सरल स्वभाव की थीं । जस्टिस एन.के. जैन साहब ने जो

असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं उसमें भी अरुणा जी की सरलता, परोपकारिता एवं विनम्रता का समुचित योगदान रहा है । स्व. अरुणा जी समाज सुधारक, महावीरजी की आस्थायान भक्त एवं अनेक कल्याणकारी प्रवृत्तियों के प्रति समर्पित महिला थीं । उनकी कीर्ति शेष हर दिन हमारी स्मृति में बनी रहेगी । अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए वीर प्रभू से प्रार्थना करते हुए अपनी संवेदना प्रेषित करती है ।

साभार - श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका (फरवरी, 2017)

जैन समाज की विभूति



“ परिवर्तिती संसारे मृतः को वो न जायते ।
स जानो येन जार्तन याति वंशः समुन्नतिम् ॥ ”

अर्थात् - इस परिवर्तनशील संसार में कौन ऐसा है, जो जन्म या मृत्यु के अजस्र प्रवाह में निरत न हो परन्तु उसी का जन्म सार्थक माना जाता है, जिसके जन्म से वंश की उन्नति निहित हो ।

श्रद्धेय जैन साहब,

यह जानकर अच्छा लगा कि स्वर्गीय श्रीमती अरुणा जी जैन जैसी विभूति की स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने की दिशा में एक स्मारिका का प्रकाशन का कार्य हाथ में लिया गया है । मुझे यदा-कदा उनके दर्शनों का लाभ प्राप्त होता रहा है और जब-जब उनसे मिलना हुआ, अधिकाधिक अच्छा लगता गया । उनकी सहज आत्मीयता ने मुझे सदैव अनुप्राणित किया । यह कल्पना से परे था कि केवल 71 वर्ष की आयु में वे हम सबसे विदा लेंगी । आपका व उनका 48 वर्ष से अधिक का साथ रहा ओर आपसे बेहतर यह कोई अनुभव नहीं कर सकता कि उनके वियोग से उत्पन्न शून्य को भरना सम्भव नहीं है ।

वे मानवीय गुणों से ओत-प्रोत, प्रसन्नमुख, स्नेह और सौजन्यता की प्रतिमूर्ति थी । श्रेष्ठ व्यवहार तथा सहयोग उनके व्यक्तित्व में समाविष्ट था । उनकी प्रकृति सहज और सरल, जीवन सन्तोषी, विचार उच्च एवं आवश्यकताएँ न्यून थीं । वे जब भी मिलती थीं, अतिशय स्नेह से कुशलक्षेम पूछकर आवश्यक जानकारी ले कोई न कोई उत्साहवर्धक बात कहती थीं । वे डबल एम. ए. तथा बी.एड. थीं । आपके न्यायिक जगत के शीर्ष पदों पर रहने के बावजूद अभिमान उनके सरल हृदय को स्पर्श नहीं कर सका था । ‘विद्या ददाति विनयम्’ इस सूक्ति को उन्होंने अपने जीवन में साकार किया था ।

स्वर्गीय श्रीमती अरुणा जैन ने निरन्तर धार्मिक अनुष्ठानों, अधिकाधिक जनकल्याणकारी कार्यों एवं सामाजिक सरोकारों से स्वयं को सम्बद्ध किया हुआ था । ‘परोपकारः पुण्याय, पापाय, परपीडनम्’ के दर्शन को जीवन में चरितार्थ करते हुए यथासंभव सबकी सहायताकरना उनके जीवन का सूत्र रहा । वे सहृदय थीं और सच्चे अर्थों में प्रत्येक का हित साधती थीं ।

वे अपने सरल और शालीन व्यक्तित्व के कारण अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की स्मृति के चित्रपट पर अपनी एक भव्य अमिट छाप छोड़ सकीं । भौतिक रूप से उनका स्थान रिक्त है किन्तु सभी परिजनों एवं परिचितों के दिल दिमाग में अमर रह वे शक्ति, प्रेरणा तथा सम्बल देती रहेंगी । वास्तव में देखा जावे तो ऐसे लोग मरते नहीं हैं अपितु परिवारजन तथा सम्पर्क में आने वालों के हृदय में निवास करते हैं ।

श्रीमती अरुणा जी जैन ने अपना सम्पूर्ण जीवन खुशमिजाजी, आत्मनिर्भरता, कर्मशीलता तथा उत्कृष्टता के साथ जिया है । जो भी आयु प्राप्त की, वह सबको स्नेह बांटते हुए । कहा जाता है कि - एक माता अपने पति व अपने सुयोग्य पुत्रों के रूप में जीवित रहती है और इसी रूप में जीवन अमरत्व को प्राप्त कर पाया है । इसके अतिरिक्त अमरत्व का एक अन्य रूप भी है, जिसे यश कहते हैं । श्रीमती जैन ने इन दोनों रूपों में अमरत्व प्राप्त किया है । ऐसा सुख, सुयश बिरलों को ही प्राप्त होता है । संस्कृत वांगमय में कहा गया है - ‘कीर्तिर्यस्य स जीवति’ अर्थात् वह व्यक्ति मृत्योपरान्त भी जीवित रहता है जिसका संसार में यश रहता है । वे ऐसे ही यशपूर्ण व्यक्तित्व की धनी थीं । महर्षि दयानन्द कहा करते थे ‘दिव्यात्माओं के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि उनकी स्मृति में कोई न कोई जनहित कार्य होता रहे’ । श्रीमती अरुणा जी जैन जैसी विशिष्ट विभूति की स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने का हर प्रयास अभीष्ट है और यह पुस्तक इसी दिशा में सार्थक प्रयास जान पड़ता है ।

सादर

शुभेच्छु

एस.एस. कोठारी, लोकायुक्त, राजस्थान

ममतामयी माँ



मेरी पूजनीय माताश्री स्व. श्रीमती अरुणा जैन के निधन को 1 वर्ष हो गया, समय धीरे-धीरे निकल गया। मैं उनको याद करता हूँ, उनके प्रति अपने मन के उद्गार एवम् स्वयं की भावना लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। वैसे तो हर माँ-बाप अपने बच्चे के लालन-पालन शिक्षा-दीक्षा, सुविधा व संस्कार देने हेतु ऐसा सबकुछ करते हैं जिससे वह आगे जाकर मानवीय मूल्यों के साथ अच्छा जीवन व्यतीत करें व एक अच्छा नागरिक साबित हो। यह मेरा सौभाग्य है कि जैन धर्म में आस्था रखने वाले परिवार में मेरा जन्म हुआ। जैन धर्म में त्याग, संयम

एवं अहिंसा को प्रभुता दी गई है। जैन धर्म किसी जाति विशेष व समुदाय का न होकर प्राणी मात्र का है व मनुष्य के उत्थान की बात करता है।

मेरी माता का जन्म 28 जुलाई, 1945 को स्वर्गीय श्री लक्ष्मीचन्द जैन के परिवार में माता लक्ष्मी देवी की कोख से जगाधरी (पंजाब) में हुआ। उन्होंने कक्षा 12 तक मुरारी गर्ल्स इंटर कॉलेज, आगरा में पढ़ाई की। बाद में हिन्दी, फिर समाजशास्त्र में एम.ए. किया और वूमैन ट्रेनिंग कॉलेज, दयालबाग, आगरा से बी.एड. किया। माताश्री ने अपने साथियों में बिना छोटा-बड़ा और जांत-पात के सबके साथ समान व्यवहार किया। वह बाल्यकाल में सादगी पसन्द, मिलनसार एवं घरेलू बालिका रहीं। पिताजी घर में कोई चीज लाते थे, तो खुद न लेकर अपने भाई-बहनों को पहले देती थी। भाई-बहन भी मम्मी को बहुत आदर व सम्मान देते थे। मेरे नाना स्व. लक्ष्मी चन्द जी एक इंजीनियर थे। उन्होंने लाहौर के एक ऐसे संस्थान से डिप्लोमा किया था जो यूएसए की प्रसिद्ध इंस्टीटयूशन से एफिलिएटेड था। उन्होंने देश के कई स्थानों पर ऑयल मिल स्थापित कराई व समय-समय पर बतौर सलाहकार मार्गदर्शन किया। बी.पी. ऑयल मिल आगरा में लम्बे समय तक सलाहकार रहे। उनका वास्ता टेक्निशियन व लेबर क्लास से रहा। घर पर भी उन लोगों का सुबह रोजाना आना-जाना रहता था, परन्तु उन्होंने किसी को छोटा नहीं समझा। उनके बच्चों को पढ़ाना, शादी ब्याह में मदद करना और सदा उनसे घर के सदस्यों की तरह व्यवहार रखना उनके स्वभाव में था। मम्मी ने भी आर्थिक दृष्टि से कमजोर घर के नौकरों के बच्चों की पढ़ाई पर सदैव पूरा ध्यान रखा।

वे अपने पांच भाई व एक बहन में सबसे बड़ी थी। उन्होंने अपना काम करने, समय की पाबन्दी और मेहमाननवाजी के गुण विकसित किये। अपने माता-पिता से सहनशीलता, स्वाभिमान, प्रेमभाव, परोपकार और सामंजस्य रखने के अच्छे संस्कार प्राप्त किए। बचपन से ही उन्होंने स्वयं को सबके समक्ष आदर्श स्वरूप में रखा तथा परिवार के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं। मेरी माताश्री का विवाह 24 नवम्बर, 1968 को मेरे पिताश्री नगेन्द्र कुमार जैन के साथ आगरा में सम्पन्न हुआ। मेरी माताश्री के ससुर न्यायमूर्ति स्व. श्री जगदीश प्रसाद जैन थे व सास स्व. श्रीमती पुष्पा थी।

माताश्री को उनके ससुराल से अपनी जैसी ही सकारात्मक सोच मिलने के कारण अपनी ससुराल के नए वातावरण में ढलने में किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं आई। उन्होंने अनजाने के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करने का मानवीय गुण अपने ससुर जी से सीखा। उन्होंने अपनी अच्छी आदतों, व्यवहार व अपने विवेकपूर्ण आचरण के कारण अपने ससुर न्यायमूर्ति स्व. श्री जे.पी. जैन व सास स्व. श्रीमती पुष्पा देवी के हृदय में जगह बना ली। वैसे देखा जाए तो मेरी माताश्री को मेरे दादा-दादी से अत्यन्त स्नेह व आशीर्वाद मिला और वे उनके प्रेरणा स्रोत भी रहे।

मेरी सरोज बुआ ने बताया कि पूजनीय माताश्री को 1971 में केन्द्रीय विद्यालय जोधपुर में सीनियर टीचर के पद पर नियुक्ति की पेशकश की गई। तत्पश्चात भी कई जगह विभिन्न टीचिंग जॉब के अवसर मिले, परन्तु उन्होंने हमें संभालने व अपना पारिवारिक दायित्व निर्वाह करने को अधिक महत्व दिया। उन्होंने मेरा व बहन गरिमा का लालन-पालन बहुत ही सलीके से किया। उन्होंने हम पर समय-समय पर सख्ती भी रखी। मुदित और तान्या को भी प्यार, स्नेह एवं सख्ती से सही मार्गदर्शन दिया। हमारी कृतज्ञता सदैव उनके प्रति बनी रहेगी।

उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था। वे धार्मिक ग्रंथ व पत्रिकाएं जैसे सरिता, कादम्बिनी, नवनीत, चंदा मामा आदि बड़े चाव से पढ़ती थीं। इसके साथ-साथ उन्होंने छोटे-छोटे घरेलू इलाज के लिए आयुर्वेदिक औषधियों के नोट्स बना रखे थे। वे मेरे चाचा डॉ. अरुण के सहयोग से परिवार में होम्योपैथिक दवाई के साथ-साथ सिर दर्द, नजला, जुकाम, दस्त, ज्वर, कब्ज आदि रोगों का इलाज घर पर ही कर देने में पारंगत हो गईं। बहुत ही जरूरी होने पर मुझे व गरिमा को जोधपुर में चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. गर्ग के पास ले जाती थीं। हाथ से स्वेटर बुनना, सिलाई करना, कसीदे, बागवानी और घर में सब्जी उगाने में उनकी रूचि थी। जब पापाजी मद्रास में कार्यरत थे तब उनके साथ रहकर कम्प्यूटर की नई तकनीक का ज्ञान श्री अरूल, हरि व नुरुनिशा बेगम से प्राप्त किया। फिर विशेष अभिरुचि के साथ उसको चलाने तथा हैडल करने के लिए नोट्स बनाए और उसी के आधार पर उस वक्त कम्प्यूटर की पूरी जानकारी हासिल की। उनके नोट्स आज भी सुरक्षित हैं। वह नई जानकारी लेने में त्वरित रुचि लेती थी। उनके जेहन में आलस्य की जगह लेशमात्र भी नहीं थी। वे हमें सदा सही व नई सोच तथा अच्छे विचारों के लिए प्रेरित करती रहती थीं।

मेरे पिताश्री 1955 से 1968 तक बैडमिन्टन के अच्छे खिलाड़ी होने के नाते स्टेट की तरफ से खेले। खेलना 1968 से बंद करने के बाद भी, बैडमिन्टन के राष्ट्रीय स्तर के टूर्नामेन्ट देश के विभिन्न राज्यों व शहरों जिनमें पूना, दिल्ली, हैदराबाद, गोवा, त्रिवेन्द्रम, जम्मू-कश्मीर, लखनऊ, विशाखापटनम, जबलपुर, शिमला, मद्रास, बोम्बे आदि शामिल हैं में जब भी आयोजित हुए तो हमें दिखाने ले जाते थे। मम्मी कुछ अपकमिंग खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करना नहीं भूलती थी। उन्हें जयपुर में थॉमस कप और ऑल इंग्लैण्ड बैडमिन्टन चैम्पियनशिप,

बर्मिंघम व पूना में जूनियर वर्ल्ड ओलम्पिक प्रतियोगिता देखने का सौभाग्य मिला। उस समय के सभी राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों से माताश्री का परिचय रहा।

माताश्री ने मेरे पिताश्री के साथ खेल देखने व अन्य मौकों पर विदेश यात्रा भी की और सभी जगह विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। माताश्री को विभिन्न जगहों के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा संवैधानिक पदासीन प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिलने का अवसर मिला। उन्होंने सर्वत्र ही अपनी धर्मपरायणता, विवेकशीलता और व्यवहार कुशलता तथा करुणामयी स्वभाव की छाप छोड़ी।

वे मेरे पिता के वकालत के कार्यकाल में उनके साथ जोधपुर व जयपुर में रहीं। वे पिताश्री के न्यायाधिपति व अध्यक्ष मानवाधिकार आयोग के कार्यकाल के दौरान क्रमशः जोधपुर, जयपुर, मद्रास, बँगलोर, शिमला व फिर जयपुर में उनके साथ रहीं। इसके अलावा उन्हें पिताजी के साथ खेलों में, बार कौंसिल की सदस्यता के दौरान, न्यायाधीश व मुख्य न्यायाधीश के पद पर कार्यरत रहते हुए कई प्रोग्राम, सेमीनार आदि में जाने व नये कोर्ट उद्घाटन आदि हेतु यात्राएँ करने का मौका भी मिला।

मेरे दादा न्यायमूर्ति स्व. श्री जगदीश प्रसाद जैन साहब का निधन 17 सितम्बर, 1975 को हुआ। उन्हीं के आशीर्वाद एवं दादीजी के मार्ग दर्शन से मेरी माताश्री ने परिवार की बड़ी पुत्रवधू होने के नाते समस्त पारिवारिक दायित्व, निष्ठा व लगन के साथ निभाएँ एवं अपनी प्रतिभा तथा व्यवहार कुशलता का पूर्ण परिचय दिया। सभी को एक सूत्र में बांधे रखा। आज भी हम सब परिवारजन एक साथ अपने मकान आर-3, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर में साथ रहते हैं।

माताश्री घर के हर सदस्य बुआओं, चाचा-चाची व मेरे पिताश्री के प्रति अत्यन्त समर्पित रहीं। उन्होंने पिता न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र कुमार जैन को हर स्तर पर सहयोग प्रदान किया। कहते हैं कि प्रत्येक पुरुष की उन्नति के पीछे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महिला का सहयोग होता है। माताश्री ने इस कथन को अक्षरशः सिद्ध किया। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी पिताश्री का साथ निभाते हुए उन्हें उच्चस्थ पदों पर मनोयोग से कार्य करने की प्रेरणा दी।

मेरी माताश्री खुशमिजाज थी, स्वयं अच्छा खाना बनाने व खिलाने के शौक के कारण उन्हें सबसे सम्मान एवं आत्मीयता मिली। वे प्राकृतिक स्थानों की यात्राओं में बड़ा आनन्द लेती थीं व हमसे यात्राओं के विवरण लिखवाना व इनाम देना नहीं भूलती थीं। उनमें दूसरों की अच्छाइयों व काम के तरीके से खुश होकर उन लोगों की तारीफ करने की बहुत अच्छी आदत थी।

मेरी माताश्री धर्मपरायण महिला रही तथा अनेक महिला विकास की योजनाओं को संबल प्रदान कर आगे बढ़ाया। वे समाज उद्धारक भगवान महावीर की आस्थावान भक्त थी। वे अनेक कल्याणकारी योजनाओं के प्रति भी समर्पित रहीं, उनकी कीर्ति आज भी सर्वत्र व्याप्त है।

अपने हँसमुख, सरल व सहज स्वभाव, विनम्रता, संवेदनशीलता व अच्छे संस्कार होने के कारण माताश्री ने हर जगह पिताश्री के खिलाड़ी साथियों, वकीलों, जजों के साथ-साथ मिलने-जुलने व अन्य कार्यों में पिताश्री को हर तरह से सहयोग प्रदान किया ।

मेरे पिताश्री अन्तर्मन की भावना व्यक्त करते हुए कहते हैं कि उन्हें अच्छे स्तर का न्यायाधिपति, विधि विशेषज्ञ तथा मानव सेवा से जोड़े रखने में मेरी माताश्री का सबसे बड़ा सहयोग रहा है । हमारे परिवार को यह आभास होता है कि वह किसी न किसी रूप में हम सब के साथ आज भी जुड़ी हुई हैं । ऐसा आभास ही नहीं होता कि वे हमें छोड़कर चली गई हैं ।

मेरी माताश्री का निधन जयपुर में 11 जनवरी, 2017 को हुआ । वे अपने पीछे देवर-देवरानियों, पुत्रवधू सोनू एवं पुत्री गरिमा-दामाद नितिनजी व बच्चों सहित एक भरा-पूरा खुशहाल परिवार छोड़ कर गई हैं । माताश्री मृदुभाषी, कम बोलने वाली, मन की साफ, बड़े दिल की, संतोषी महिला होने के कारण विलक्षण व्यक्तित्व की धनी थीं । हम सभी परिवारजनों ने जिन मानवीय मूल्यों को संजाये रखा है, उसकी निरन्तरता बनाये रखने में मेरी करुणामयी माताश्री का बहुत बड़ा हाथ है । वो ही झलक मुझे उनके पौत्र मुदित व पौत्री तान्या में दिखाई देती है । आज भी ईश्वर की कृपा से मुझे उनके सिद्धान्तों से प्रतिपल प्रेरणा मिलती रहती है जिससे प्रेरित होकर मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह ईमानदारी से करने का सदैव प्रयास करता रहता हूँ । माताश्री जी की कुछ पुरानी व दादाजी के शताब्दी समारोह के कुछ छायाचित्र अपने उद्गारों के साथ संलग्न कर रहा हूँ ।

माताश्री के सभी विलक्षण गुणों को देखते हुये मैं यह महसूस करता हूँ कि वास्तव में माँ का स्थान सर्वोपरि है । माताश्री ने स्वामी विवेकानन्द का कथन सही साबित किया कि लड़की एक नहीं, दो घरों को अर्थात् अपने पिता के घर के साथ-साथ अपने पति के घर को सँवारती है । ईश्वर सभी को ऐसी ममतामयी माँ दे । ऐसी पवित्र आत्मा को हमारा शत्रु-शत्रुनमन ।

गौरव जैन

शब्द पढ़ने के लिए, अनुभव सीखने के लिए
हृदय समर्पित मम्मी की मधुर स्मृतियों के लिए



Mind is not dustbin, to keep anger, hatred
and jealousy. But it is a treasure box to
keep love, happiness and sweet memories



Proved worthy of the confidence reposed in her



My sister late Smt. Aruna Jain left us on last 11th January, 2017. Her memories are always in our mind and heart. She was a very simple, dignified and graceful lady. She was sincere from her childhood. To live with grace simplicity and dignity was her life trait.

Aruna was born on 28th July 1945 in Jagadhari (Punjab) in a middle class Jain family. She did M.A (Hindi), M.A. (Sociology) and B.Ed.. Her father, Late Shri Laxmi Chand Jain was an Engineer and her mother Smt Laxmi Devi Jain was a house wife. Aruna was the eldest among

five brothers and one sister . She was about 2½ years elder to me, therefore, I could watch her childhood and upbringing very closely . Our father Late Shri Laxmi Chand Jain was a Mechanical Engineer. He worked for about 40 years as a chief Engineer in B.P. Oil Mill, Agra which was a renowned oil mill of those times. Our father was a very disciplined and simple person, he was very punctual.

Aruna used to wear very simple dress. I found Aruna not talkative but was very determined. Being the eldest and the first child of family, she was very close to Pitaji and Amma. Pitaji also used to share important family matters with her even after her marriage and also consult her about the marriage of all brothers and sister etc. as well. She played a very active and mature role in the family. Aruna commanded full respect from them.

In her childhood, her bonding with brothers and sister was extremely good. I remember when we were children and some (eatable) things were brought in the house she used to distribute amongst all her younger brothers and then sister first without caring what was left for her in the last. This habit made her happy and satisfied. At a very young age, she could understand what are the duties of elders. She was very much influenced by her father-in-law Justice J. P. Jain Sahib and proved worthy of the confidence reposed in her by him. She got a respectable place throughout in this family.

Aruna's father-in-law was a Judge and she could very well understand how to remain in such an environment. She achieved very high and respected place in the society. Later her husband became the Chief Justice, but this position could never make any difference.

Aruna was in the habit of learning and reading good books and I was surprised to know that she learned the art of computer application in Madras and Karnataka. She also had an opportunity to see and meet many dignitaries with confidence and ease. She never departed herself from her grass roots. May her soul rest in peace.

Dhrupat Jain

हमारी अन्नपूर्णा



श्रीमती अरुणा जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् नगोन्द्र कुमार जी जैन पूर्व मुख्य न्यायाधीश मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय एक नेकदिल सभ्रान्त, सुशील, सरल, सहज, सुघड, सुहृदय, सादगी पंसद, विनम्र, स्नेहशीलता एवं आत्मीयता से ओतप्रोत व्यक्तित्व की धनी महिला थी। सौहार्द, समन्वयभाव एवं संवेदनशीलता उनमें कूट-कूटकर भरी थी। एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (सोशियॉलोजी) एवं बी.एड की शिक्षा प्राप्त महिला जो माननीय न्यायमूर्ति जगदीश प्रसाद जी जैन की पुत्रवधू एवं माननीय मुख्य न्यायाधिपति एन.के.जैन साहब की सह धर्मिणी होने के बावजूद अहम् और अहंकार उनके पास फटक नहीं पाया था। वे विनम्रता की प्रतिमूर्ति थी।

उन्होंने इन सभी उपलब्धियों के बावजूद कभी अपने व्यक्तित्व की अलग पहचान बनाने की कोशिश नहीं की वरन् एक समर्पित धर्मपत्नी के रूप में अपने पति की छाया बनकर सदैव अपना जीवन जिया था।

उनका जन्म 28 जुलाई 1945 को जगाधरी (पंजाब) में ख्यातिनाम इंजीनियर लक्ष्मीचंद जी की धर्मपत्नी श्रद्धेय लक्ष्मीदेवी की रत्न-कुक्षी से हुआ था। पंजाब व हरियाणा में जन्म लेकर भी वहां की अकड़ उन्हें छू भी नहीं पाई थी। श्री गौरव जैन उनके सुपुत्र सोनू, पुत्रवधू एवं श्रीमती गरिमा धर्मपत्नी नितिन जी उनकी सुपुत्री हैं। मुदित उनके सुपौत्र एवं तान्या उनकी पोती हैं। तन्मय एवं आर्यन् उनके दोहित्र हैं।

पढ़ने-लिखने, सिलाई, बुनाई एवं वैद्यगी में उनकी विशेष रुचि एवं रूझान था। मेहमान नवाजी व खातिरदारी उनके परम प्रिय शौक थे। स्वयं व्यंजन बनाकर खिलाने में उन्हे बड़ा आनन्द प्राप्त होता था। अतएव हम राजस्थान उच्च न्यायालय के तत्कालीन न्यायाधीशों ने जिनके साथ वह सन् 1990 से 1997 तक रही थीं बड़े सम्मान के साथ उन्हें अन्नपूर्णा भाभी के खिताब से नवाजा था। माननीय श्री एन.के.जैन साहब दो वर्ष मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति एवं दो वर्ष उसके मुख्य न्यायाधीश रहे। तत्पश्चात तीन वर्ष से अधिक समय तक वे कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे। वहां भी श्रीमती अरुणा भाभी ने अपनी मेहमान नवाजी व खातिरदारी की अमिट छाप छोड़ी थी। अपने श्रद्धेय श्वसुर माननीय न्यायमूर्ति जे.पी.जैन साहब व अपनी सासुमां के देहावसान के बावजूद भी श्रीमती अरुणा जी जैन ने अपने पति सहित चारों भाईयों के परिवार को एक धागे में मणिमाला की तरह पिरोकर रखा। कदाग्रह, दुराग्रह व स्वाग्रह उन्हें कभी भी छू नहीं पाया। इसीलिए वे इतनी सिद्धान्तप्रिय रह पाईं। यह उनके चरित्र का एक बहुत उजागर पक्ष है एवं एक अति विशिष्ट व प्रेरणादायक उपलब्धि है। इतने बड़े औहदों पर रह कर भी इतना सादा-सरल एवं विनम्र रह पाना यह उनके ही चरित्र की खूबी है वरन् पति की जरा सी उपलब्धि पर स्त्रियां इतना इतरा जाती हैं कि उनके जमीन पर पांव पड़ना भी कठिन हो जाता है।

कुल मिलाकर वे एक आदर्श पत्नी एक महान परिवार पालक एवं स्नेह, माधुर्य व अपनत्व के सुसंस्कारों की जीती-जागती मिसाल थी। मेरा उनको कोटि-कोटि नमन एवं अभिवादन। उनके द्वारा स्थापित मूल्य एवं आदर्श हम सबका व हमारे परिवारों का पथ प्रदर्शन करें यही मंगलकामना है। फक्त

जसराज चौपड़ा

पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर

My Vivid Memory



As far as my vivid memory goes, I had seen my elder sister, Aruna Jain, in the role of a mother too. She was the eldest amongst the seven children of our parents. During our childhood, it was a luxury to engage someone for help hence our mother had to do every work. So it was the need of the time to look after us, this job was beautifully performed by my sister. She was very keen to learn and enrich her knowledge. In first half of sixties of last century, Acharya Vidyanandji Muniraj came to Agra and addressed the habitants about Jainism. She used to write down the narration delivered by Acharyaji. This learning desire had given her an edge over others and she did the Masters twice.

She was very dear to our father. Pitaji performed her marriage in a dignified manner and our family was very lucky to have the family of great stature. She received excellent grooming after marriage by her father-in-law. She had delivered the necessary support to us as and when needed apart from grooming her own family.

We have attended the marriage of her three sisters-in-law, Saroj, Meena and Veena bahenji at Jodhpur. During that period, respected Babuji always praised Aruna. The entire family appreciated the humbleness of respected Judge Sahib. This made her capable to undertake the greater responsibilities of the family. Bahenji did her best and proved herself to the satisfaction of Babuji and family members. She remained devoted to her family members until her last breath.

The tradition of the family has been deep rooted in the life of Jijaji Justice Nagendra Kumar Jain Sahib and his siblings. She was instrumental in the proper upbringing of son Gaurav and daughter Garima. This tradition is still noticeable in the upbringing of her grandchildren namely, Tanmay, Mudit, Aryan, and Tanya. This shows the deep-rooted bonding of the family.

At last, I can say that it is a trite fact that we have to depart one day, but the destiny gives us the strength and courage to do excellent every day.

Nishith Jain

Made for Each Other



Vanakkam. Namaskar.

I had the opportunity to move with Hon'ble Mr. Justice N.K. Jain, when he was the Judge and Chief Justice of Madras High Court from 1997 to 2001.

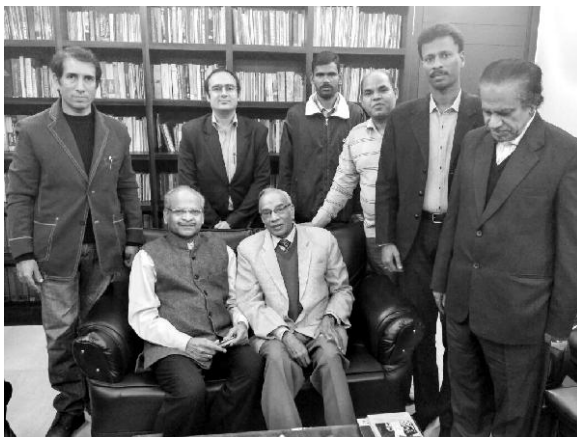
At the outset, I must appreciate the great quality of Justice Jain to affectionately remember the service rendered by his wife Mrs. Aruna Jain even after her demise, and his grateful endeavour to collect articles from various personalities, including mine, for releasing a book in her memory. This attitude shows that he is a true and honest husband.

When we were sitting-Judges in Madras High Court, Justice Jain's family used to be very affectionate and cordial towards me and my family. During that period, our two families had the opportunity to move with each other closely.

Whenever myself and my wife had opportunity to visit Justice Jain, either at his residence or in functions official/private, we were very much impressed with the simplicity and gentle behaviour of Mrs. Aruna Jain.

During our visits to the residence of Justice Jain, she used to prepare coffee and snacks for us with her own hands and serve us, despite servants being at her command. Same kind of hospitality and kindness was shown by her to the Judges who retired or went on transfer to other HC. Because of this great quality, she is being remembered by everyone even now.

Justice Jain's affection and love towards his wife Mrs. Aruna Jain is so great that he has taken the task of releasing a book in her memory. Both of them have proved themselves to be "MADE FOR EACH OTHER".



JUSTICE M. KARPAGAVINAYAGAM

(Former Chief Justice of Jharkhand HC and Chairperson of Appellate Tribunal for Electricity, New Delhi)

Senior Advocate

SC of India,

New Delhi.

Hamari Aruna Bahenji



It is extremely difficult to express in words the magnanimous personality of our beloved Bahenji. With passage of time she possessed and acquired a lot of extraordinary qualities hence any attempt to define her personality in words can not do full justice to her.

She was a lady with few words but maintained high morals & values. She used to treat every one equally and at par. It was indeed my fortune to be one of her siblings to imbibe some of her innumerable traits. She always had a desire that all the activities performed by her should be perfect, whether it is managing house, bringing up children, entertaining guests and friends or attending functions. She always ensured that even during her busy schedule no important work is left out incomplete.

She was different from her childhood. However having grown up in a small & conservative city like Agra, surprisingly her friends consisted of girls from all religions. I remember how we all used to go to late night movies that was unheard of in the city like Agra.

She had always happily discharged her responsibilities & duties and faced all the challenges boldly, she was a woman of great mettle. Bahenji will always be a pride figure for all of us. She used to do all house hold chores by herself despite having all help available at her disposal. She used to derive a lot of satisfaction while cooking & entertaining guests. She always kept pace with changing time and even learnt computer, email etc at a very ripe age.

It was quite commendable on her part that she transformed her personality from a shy & introvert girl to a bold and confident lady, who earned a lot of appreciations from one & all inside and outside the family. Being wife of a Chief Justice, she had to be a part of elite group and required to deal with dignitaries but she equipped and trained herself to carry on these activities nicely. We all pay our heartfelt homage to her.

AJAY KUMAR JAIN

Chief General Manager(Retd) ITS
Deptt Of Telecom, New Delhi

A helping hand to others



Dear esteemed brother Justice Nagendra Kumar Jain,

I was saddened to know about the sad demise of your wife Smt. Aruna Jain, who is well known amongst the Judges of the High Court of Karnataka and their wives as Aruna Bhabhi.

My association with you and Aruna Bhabhi goes back to my association with the Bar Council of India during the period from 1982-83 onwards.

I had the pleasure of dining in your house and eating delicious and sumptuous food prepared by Aruna Bhabhi. She was an excellent cook, affectionate house wife, highly hospitable and generous in her outlook. When you were the Chief Justice of Karnataka High Court, Aruna Bhabhi was a real source of inspiration and guidance. She extended all the assistance required by the wives of your companion judge.

Her academic qualifications did not come in her way of being highly compassionate & sympathetic. She extended her helping hand to others who ever needed her assistance.

She will be remembered for a long time to come for her good qualities viz affection, behaviour and helping hand to one and all. I am very happy that you are releasing a small book to perpetuate the loving memory of your beloved wife Aruna Bhabhi and I hope the young generation will be inspired by her good qualities and virtues.

She has left behind her son, Mr. Gaurav, who is an advocate of merit and his wife Smt. Sonu and daughter Smt. Garima and son-in-law Shri. Nithin and four grand children.

All of us miss her and pray to Lord Almighty to rest her soul in peace and give you and all the members of the family all the strength to face the loss of Aruna Bhabhi.

With warmest regards,

Justice P. Vishwanatha Shetty
Former Judge, High Court Karnataka.
and Lokayukta

करुणामयी देवी



माँ और सास का एक रूप, उदारता, सौहार्दता व संवेदनशीलता की प्रतिमूर्ति थी श्रीमती अरुणाजी। उनकी मिलनसारिता व विनयशीलता से मैं बहुत ही प्रभावित थीं। उन्होंने मेरी पुत्री सोनू में श्रेष्ठ संस्कार देकर उसमें आगन्तुकों का सत्कार करने के गुण विकसित किए। उन्होंने मेरी पुत्री की भूल एवं गलतियों को नजर अन्दाज कर उसे उपयुक्त मार्गदर्शन दिया व मुझे कभी कुछ नहीं कहा। यह उनकी प्रबन्धन शैली, ट्रेनिंग व सम्बन्धों में मधुरता को लक्षित करता है। उनका प्रेम भाव इतना अधिक था कि मैं अपनी समस्याओं के बारे में

उनसे सलाह लेती थी और उनका मार्गदर्शन सही साबित होता था। वे मेरी अच्छी समधन होने के साथ-साथ, अच्छी मित्र व सहेली थीं। उनका व्यवहार कौशल मेरे लिए सदैव आदर्श रहा।

अपने कर्तव्यों के प्रति सजग थीं व जैन धर्म के सिद्धान्तों में अपार श्रद्धा थी और वह उन पर आचरण भी करती थीं। वे सेवाभाव, परोपकार की भावना से ओतप्रोत थीं। वे सामाजिक कार्यों-जैसे गरीबों को भोजन, वस्त्र उपलब्ध करवाती थीं व दिव्यांग बच्चों के हॉस्टल में समय-समय पर जाकर उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करती थीं।

उनका निधन मेरे लिये बहुत बड़ी क्षति है वे मेरे लिये मित्र, दार्शनिक एवं मार्गदर्शक थीं। उनकी प्रेरणादायक छवि आज भी मेरी स्मृति में ताजा है। मैं स्वयं अपनी ओर से व अपने परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक व भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

(रुकमणी जैन)

संवेदना (फरवरी 2017)

श्री महावीर क्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री नगेन्द्र कुमार जैन की धर्मपत्नी श्रीमती अरुणा देवी का 72 वर्ष की आयु में जयपुर में स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म आगरा के प्रतिष्ठित एवं सभ्रान्त परिवार में श्रीमती लक्ष्मी देवी एवं स्व. श्री लक्ष्मीचन्द्र जी जैन इंजीनियर के यहाँ 28 जुलाई, 1945 को हुआ था। उन्होंने एम.ए. हिन्दी, एम.ए. सोशियोलॉजी एवं बी. एड. की शिक्षा आगरा से प्राप्त की। श्रीमती अरुणा जैन जी अपने पाँच भाई और दो बहिनों में सबसे बड़ी थी। अरुणा जी का विवाह श्री नगेन्द्र कुमार जैन के साथ 24 नवम्बर, 1968 को आगरा में सम्पन्न हुआ। अरुणा जी के ससुर न्यायमूर्ति स्व. जगदीश प्रसाद जैन एवं सास स्व. पुष्पा देवी जी थे जो सदा उनके लिए प्रेरणा स्रोत रहे। न्यायमूर्ति स्व. श्री जे.पी. जैन साहब का इन पर अत्यधिक स्नेह एवं आशीर्वाद अपनी मृत्यु पर्यन्त तक रहा। उन्हीं के आशीर्वाद एवं सासू माँ के मार्गदर्शन से श्रीमती अरुणा जी ने अपने परिवार की बड़ी पुत्रवधु होने के नाते समस्त कर्तव्य निष्ठापूर्वक निभाये एवं अपनी सूझबूझ एवं

व्यवहार कुशलता से अपने पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखा और घर परिवार और समाज से सम्बन्धित कार्यों के प्रति निर्णय लेने में सदैव तत्पर रहीं और अपनी विनम्रता शीलता शालीनता हमेशा बनाये रखी, जो कि आज के समाज में एक बहुत प्रेरणादायक उदाहरण है। श्रीमती अरुणा जी अपने पति के लिए जीवनपर्यन्त अति सौभाग्यशाली सिद्ध रहीं। इनके पति श्री नगेन्द्र कुमार जी उच्च संवैधानिक पदों पर प्रतिष्ठित रहे। इसके बावजूद इनका जीवन अत्यन्त ही सादगीपूर्ण रहा और इनके आचरण में कभी अभिमान का अंश लेशमात्र भी नहीं था। श्रीमती अरुणा जी एक धर्मपरायण, विवेकशील, विचारशील व सन्तोषी थी। श्रीमती अरुणा जी अपने पीछे देवर-देवरानियों सहित पुत्र श्री गौरव जैन एडवोकेट एवं पुत्रवधु श्रीमती सोनू एवं पुत्री गरिमा व दामाद नितिन जी एवं बच्चों सहित एक भरापूरा खुशहाल परिवार छोड़कर गई हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह ऐसी विशुद्ध एवं पवित्र आत्मा को शान्ति प्रदान करे। उन्हें सद्गति प्रदान करे। - स्वतंत्र चिन्तन, अजमेर

A Noble and Affectionate Lady



An asteroid got dispensed from the Heavens and stepped on the earth on 28th July, 1945 in the home of Shri Laxmi Chand Jain and Smt. Laxmi Devi at Jagadari, Punjab and was named Aruna Jain. As the name Aruna is used in our culture for “the bright morning sun”, the parents have aptly given this name to their daughter since, first of all, the baby girl enlightened her parents home with the auspicious morning Sunlight and the same was continued in the home of Hon’ble Justice N.K. Jain Sahib’s family.

The cute angel baby girl grew up gradually with the passage of time and acquired knowledge in different fields by pursuing the Degrees of M. A. in Hindi as well as in Sociology and B.Ed.

The angel baby girl now turned into a pious lady and was tied up in the nuptial knot with Justice N.K. Jain on 24th November, 1968 at Agra. The couple, eventually, went blessed with son, Gaurav and daughter, Garima. The time-wheel kept on spinning and the family tree was further studded with grand children.

While recalling the past memories, my wife, Shobha Patil, recollects and cherishes her association with Madam Aruna Jain from 2001 to 2004, with deep sentiments and thoughts of the days when Madam used to host Breakfast, Lunch or Dinner in the residential house of the Chief Justice at Shanti Graha, with utmost love towards one and all, irrespective of their socio-economic level, treating all of us as her family members. She was, at times, synonymised with Goddess Annapoorneshwari since she was fond of cooking and serving herself with great affection on auspicious occasions like festivals, New Year Day or any other auspicious day. She had a special corner in her heart for the upliftment of the less-privileged, backward, marginalized and downtrodden strata of the society. She was very noble, upright, affectionate, God-fearing and above all a good human being. And last but not the least, all these conjunctions are no exaggerations about her portrait but are the literal truth.

From the Core of our Hearts, we pay our sincere tributes to the Departed Soul and pray to the Almighty God to give all the required strength and courage to Hon’ble Justice N.K. Jain Sahib and family members to bear this Great Loss.

The great pious and God-fearing lady left for her heavenly abode on 11th January, 2017 from Jaipur leaving us in the lurch-stranded, high and dry - and leaving behind her sweet and cozy memories to be nurtured deep in our hearts for the time eternal. With warm regards.

Justice N.K. Patil

Former HC Judge, KRT & Judicial Member, App. Trib.I For Electricity, New Delhi

A Noble Wife of a Noble Judge



Smt. Aruna Jain was the noble wife of the noble Hon'ble Justice Nagendra Kumar Jain, the then Chief Justice of the High Court of Karnataka at Bengaluru, during the years 2001-2004. She was a courteous and humble lady. She treated all the ladies alike without any discrimination. Her nobility, simplicity and courteousness are model to others. She never displayed, either by face or by her conduct, to others as the wife of a Chief justice.

She was a pious and orthodox lady. Still she knew very well the manners of treating persons visiting her bungalow. She was not a talkative lady. On the other hand, she was a silent lady, calm, quiet with abundant patience, who allowed others to speak.

She had no ego or superiority complex of the power or post held by her husband Hon'ble Justice N.K.Jain. We enjoyed her hospitality, whenever we were invited for parties at their bungalow.

She was a simple & humble lady and was full of affection for everyone. To put it in a sentence, it could be said that she was a perfect better half of Hon'ble Justice N.K.Jain. Since I had worked with Hon'ble Justice N. K.Jain, I can say without any fear of contradiction that both of them were made for each other.

Though she is not in our midst now, we still remember her at times. In fact, now a days, it is rather difficult to find such a simple, noble & affectionate lady. May her soul rest in peace, for which I pray to God.

Justice S. B. Majage

Former Judge

High Court & Up-Lokayakata

Karnataka State



Happy people are those who know
how to be tough with themselves
and tender with others.



My Dear Bhabhi



Aruna, My bhabhi, entered in our house on 25th November 1968. She was married to my elder brother Shri N. K. Jain then an advocate. She belonged to an affluent Jain family of Agra. Her father was an Engineer. She imbibed all the good qualities which my parents had expected from her. She was thin, fair and good looking with a round face, well educated and with good disposition. She was friendly and respected all family members doing her household work. She was a lady with few words along with more understanding. She

adjusted well in our family.

My Bhabhi was supportive of our marriage, i.e. the three of us, Dr. Veena, Saroj, and Myself under the guidance of my father Justice J. P. Jain. When my father expired in 1975, she was instrumental in arranging the marriage of my three younger brothers Dr. Arun, Ashok, and Anil with the help of my mother.

When she delivered her first baby Gaurav, he was about 180 days only when war with Pak broke down. There were too many bombardments and we were residing close to Air Force officers mess as its compound wall was common with our official residence. She did not show any sign of nervousness or panic, she braved it all, going in and out of the trench several times day and night. My father left for his heavenly abode in the year 1975, Rajasthan High Court bench was restored in Jaipur in 1977-78 and therefore our family shifted to Jaipur.

In course of time, my brother became Judge of Rajasthan High Court, Jodhpur in July 1990 and later on, he was transferred to Jaipur and then to Madras and Karnataka High Court as Chief Justice. She adjusted herself well in her new surroundings, showed her managerial skill to run the house hold well and made all arrangements befitting everyone who visited them. She was deft in cooking and culinary art as a good hostess. She would always welcome everyone. She was good, humble and treated the servants with humanity. She was a person with abundant affection for her children both Gaurav and Garima and took good care of them. She always stood by the side of her husband and supported him .

She was religious & pious too. Sudden death snatched her from us. On 30th June, 2016 my younger brother Anil too faced the same fate leaving the family in pain and agony.

Thus to my mind, brother has proved to be a worthy son and a sincere husband too. I pray to the almighty to keep this pious soul in peace.

Meena Ghia

प्रेम एवं वात्सल्य की मूर्ति



प्रभु की असीम कृपा से मेरा विवाह आदरणीय न्यायमूर्ति स्व. जे. पी. जैन साहब के परिवार में उनके द्वितीय पुत्र डॉ. अरुण जैन के साथ दिनांक 28 मई, 1977 को जयपुर में सम्पन्न हुआ।

ब्याह के बाद हम सी-स्कीम स्थित घर के दरवाजे पर पहुंचे तो सामने सीधी-सादी, सौम्यमूर्ति हाथ में आरती का थाल लिए हमारा गृहप्रवेश करवाने हेतु खड़ी थी और ये आदरणीय अरुणा भाभी जी ही थी, जिन्होंने हमारी आरती उतार कर हमें गृहप्रवेश करवाया था। कहने को ये मेरी जिठानी थी परन्तु जिठानी कम और बड़ी बहिन ज्यादा थी।

बड़ी बहिन की तरह समय-समय पर इनका सहयोग और मार्गदर्शन मुझे मिलता रहता था। हम दोनों में बहुत घनिष्ठता थी। कहीं भी जाना होता था तो हम साथ-साथ जाते थे। घर पर फुर्सत के क्षणों में हर प्रकार की बातें किया करते थे। भाभी जी ने हमेशा ही मुझे प्रेम और वात्सल्य दिया।

उनकी सलाह और साथ ने मुझ में उन विपरीत एवं कठिन परिस्थितियों से जूझने का साहस दिया। मैंने अपने जीवन के उतार-चढ़ाव में सदैव उन्हें अपने दिल के करीब पाया और उनका आशीर्वाद व स्नेह सदा मेरे साथ रहा। हर संकट की घड़ी में वे हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। हमेशा मेरे सुख-दुख की राजदार रहीं।

अपने पीहर में सबसे बड़ी बेटा और ससुराल में सबसे बड़ी बहू होने के नाते दोनों ही परिवारों में अपनी योग्यता, आत्मविश्वास, और पूर्ण निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का बखूबी निर्वाह किया। उन्होंने अपने प्रेम व स्नेह से दोनों परिवारों को एकता के सूत्र में बांधे रखा। अरुणा भाभी के इस उत्कृष्ट व्यक्तित्व के लिए हम उनके गुणों का गुणानुवाद किन शब्दों में करें। इसके लिए हम सभी के पास कोई शब्द नहीं है।

आदरणीया अरुणा भाभी जी ने सदैव पूर्ण स्वस्थ एवं प्रफुल्लित रहते हुए आनन्द के साथ जीवन व्यतीत किया। मैंने उन्हें कभी बीमार होते व दवा लेते नहीं देखा परन्तु ईश्वर की मर्जी व कर्म विधान के कारण, जीवन के अन्तिम क्षणों में मानस को उद्वेलित कर देने वाली असीम वेदना को अपने में समेट कर पुनः जिस साहस, धैर्य और संयम का परिचय दिया वह वन्दनीय है।

भाभीजी के बारे में यह कहना उचित ही है :-

कुछ सितारों की चमक नहीं जाती, कुछ यादों की कसक नहीं जाती,
कुछ लोगों से होता है ऐसा रिश्ता, जीवन से उसकी महक नहीं जाती।

स्नेह जैन

अहा ! पुष्प की महक उसके मुझाने के बाद भी बनी रहती है
क्योंकि उसके परागकण बगीचे में ही बिखरे रहते हैं।

माँ मेरी प्रेरणा



माँ जननी है, अपनी संतान के सुख के लिए माँ अनेक कष्टों और प्रताड़नाओं को भी सहर्ष स्वीकार कर लेती है। माँ के समान स्नेह एवं त्याग का दूसरा उदाहरण पृथ्वी पर मिलना सम्भव नहीं है। माँ के स्नेह की तुलना किसी अन्य के स्नेह से नहीं की जा सकती। एक माँ ही हर किसी व्यक्ति की प्राथमिक शिक्षिका होती है। परिवार में माँ का महत्व सबसे बड़ा होता है। परमात्मा की कृपा से मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मेरा जन्म एक संस्कार युक्त परिवार में हुआ।

मेरी माँ अरुणा सरल स्वभाव की भावुक और धर्मपरायण स्त्री थी। घर में सबसे बड़ी बहू थी। उनमें आत्म स्वाभिमान था और वो सबको सदैव एक साथ बाँध कर चलती थीं। घर की सारी जिम्मेदारियाँ सहज ही उठा लेती थीं। वह एक कुशल गृहिणी थी। वह समय की पाबन्द, कार्य कुशल, अनुशासित, कर्मठ और दयालु थीं। वे खाना बनाने में अति कुशल थीं। कुछ मिलने वाले उनको अन्नपूर्णा के नाम से सम्बोधित करते थे। मैंने सदैव मम्मी को ममता व पापा को शक्ति के रूप में देखा। मैंने मम्मी व पापा को आपस में ऊँची आवाज में बात करते न देखा ना सुना। दोनों में अच्छी आपसी समझ थी। दोनों ने हमेशा आपसी तालमेल बनाये रखा। मेरी माँ ने पापा को हमेशा हर तरह का सहयोग दिया। वे सभी की प्रेरणास्रोत रहीं।

घर-परिवार को सम्भालने के साथ मेरी मम्मी ने मेरे भाई गौरव और मेरा लाडु प्यार के साथ पालन-पोषण किया। घर के सदस्यों में सामंजस्य रखा, साथ ही हमें योग्य बनाने के लिये कठोर प्रयास किया। वह सदैव हमारे दुःख दर्द दूर करने के लिए सजग व प्रयासरत रहती थीं। उन्होंने हमें सुसंस्कार प्रदान किये, अनुशासन का पालन करना सिखाया, हर चीज को सलीके से जगह पर रखना, सबसे अच्छा व्यवहार करना, और जीवन में सही कार्य करने के लिये सदा प्रेरित किया। उन्होंने ही मुझे खाना बनाने में पारंगत किया। मम्मी बहुत ही शांत स्वभाव की थीं वे मन की साफ थी। घर में सबके साथ अच्छा व्यवहार किया, जरूरत के समय पर मम्मी ने सबकी मदद की। सभी बुआओं, चाचा-चाची, मामा-मामी व बच्चों को अपनत्व तथा स्नेह दिया। गौरव की शादी के बाद सोनू भाभी ने भी उन्हें अपना पूरा सहयोग दिया। वे जब भी बाहर जाती थीं, तो सभी के लिए व बच्चों के लिए विशेष उपहार लाती थीं। वे सोनू भाभी व मुझमें कोई फर्क नहीं करती थीं। वे सदैव हम दोनों को एक सा उपहार दिया करती थीं।

उन्हीं की सीख थी कि कठिनाई और विपरीत परिस्थिति में संयम एवं धैर्य रखने पर लक्ष्य स्वतः प्राप्त हो जाता है। आज तक इस सीख से मुझे हौसला और सफलता मिली है। वे आज भी मेरे साथ हैं। सोनू भाभी ने मम्मी की बीमारी में बहुत सेवा की। उनका आशीर्वाद हमारे साथ है और सदैव रहेगा। मम्मी ने हमें भगवान में विश्वास एवं आस्था रखना सिखाया।

- गरिमा जैन

A lady with love and cordiality with one and all



Respected Sir,

It is with great pleasure I share my fond reminiscences with late Madam Aruna, while his Lordship Justice N.K.Jain was the Chief Justice of the High Court of Karnataka. Madam was very caring and kind to all the Hon'ble Judges and their wives. She always extended helping hand to every one.

I recall Madam was an embodiment of simplicity, kindness and humility. She extended warmth and love and it was this quality that stood out very prominently in all her interactions, be it at Official Dinners or dinners at Residence. Post retirement the Hon'ble Chief Justice having taken up residence at Jaipur, my family and I called upon Sir and Madam to extend our greetings when Madam immediately extended an invitation for dinner on the following evening. She looked into every small detail from the hot rotis to the delicious sweets that was served with so much affection and finally a box of sweets was given for our onward journey.

With her good qualities and sweet nature, she will be remembered for a long time by the persons, who were there at Bangaluru at that time, in future. The love and cordiality continued post retirement. I pray my sincere and affectionate tribute. We will miss you dear Madam.

With warm regards,

S. Nivedita Reddy

Wife of Justice Ram Mohan Reddy



Aruna with Judges wives

A Pleasing Personality



Sun of the family of JAINS started rising with the entry of Aruna Bhabhi when she got married to my affectionate brother cum sincere friend Shri N.K. Jain Sahib on 24th November, 1968 at Agra. I in my childhood had witnessed developing a deep and sincere friendship between two legal luminaries Uncle Shri J.P. Jain Sahib and my father Shri Chand Mal Sahib Lodha, culminating into thick and true friendship between big families, large enough for socialization, mutual understanding and welfare.

Head of both the families then were giants of law and stalwart advocates.

Soon after passing out from the University, Nagendra Bhai Sahib and Aruna Bhabhi got tied up in sacred marriage bonds. Vivid memories of togetherness with Nagendra Bhai Sahib in the University, Badminton Court, Umed Club, family parties, as advocates and then Bhai Sahib on the Bench and myself at the Bar are unforgettable and memorable. Nagendra Bhai Sahib being the eldest son of uncle Jain Sahib, Aruna Bhabhi too was bestowed with all possible responsibilities in the large family. Nagendra Bhai Sahib reluctantly joined the legal profession but with the moral support of Aruna Bhabhi that he should continue and work hard in legal profession. This made him reach the pinnacle of the career and was not only elevated to the bench of Rajasthan High Court but also ornamented the constitutional high office as Chief Justice of Madras and Karnataka High Courts.

But before reaching to such dizzy heights he actively participated in Bar Association and Bar Council elections and was member of the Bar Council for a number of years and its Chairman too.

Gandhi once said “without Kasturba I was incomplete and unaccomplished” Aruna Bhabhi benevolently contributed in the family in making of J.P. Jain Sahib and Nagendra Bhai Sahib both. Aruna Bhabhi immensely respected Smt. and Shri Jain Sahib, served them well until their last. They too were very kind hearted, affectionate and caring. Her every word to them was a piece of valuable advice.

She loved her unmarried and later on married brothers-in-law and sisters in law and their families, discharging duties towards them by all means until her last. As mother, she also brought up her children

and made them disciplined and responsible citizens. With the result today Gaurav and Garima both are leading a happy married life with her blessings.

While as wife of a Judge and Chief Justice her countenance was nothing but a pleasing personality, every lasting chuckle of delight on her face with helping hand extended to all including domestic servants provided by the High Court. She was quiet and cool with deep sense of understanding, she communicated silently but effectively. For her speech was silver and silence was gold.

The happiness of all was the mission of this perfect pair, which they tried to attain and achieve till they were together, for about 49 years. To me she always turned a smiling face capturing my feelings but praised my wife Rukma for her tension free nature, treating us as family members. Time passes through either with immense interactions or intermittent long breaks but the good lasting memories never fade. So is true with Aruna Bhabhi.

खुदा बख्शे ऐसी रहनुमाई, हर एक शख्स पर ।
जीते जी शोहरत मिले, और जन्त जाने पर ॥



◀ Mr. Justice Dave CJ & other judges

L.M. Lodha
Advocate

▶ Wives of Judges & Advocates
with Mrs. & Mr. Justice C. Honniah
Chief Justice Rajasthan



The Caring and Dedicated Housewife



I feel immense pleasure after knowing that to perpetuate the loving memory of his beloved wife Aruna, Justice Nagendra Jain is bringing out a small book containing her profile with some old photographs and tributes from distinguished persons, friends and family members.

I would like to share my happy moments in this noble work which clearly proves that Aruna still lives in his mind and heart. I appreciate this gesture of his. I have known Nagendra and his family since 1960, when we used to play Badminton along with Prathiba, Manju and others at Ashok Club, Jaipur.

Aruna joined the cheerful household in 1968, quickly adapting and adjusting herself to her new home. In all my recollections I see her as a simple, unassuming and hardworking woman, who successfully lived the difficult roles of caring as mother and as dedicated housewife.

Daughter-in-law of a High court judge and wife of the holder of esteemed constitutional post, Aruna never forgot her roots and lived a life of humbleness with calmness. Leading a modest life, she possessed well-balanced mind and emotions; a rare quality in modern times.

The way she led her life was an inspiration to all. Her piousness and immense diligence towards her loved ones was evident, but her helpfulness and humane attitude touched everyone, who met her. For her remarkable qualities and tireless service not only to her family but also to society, she'll be remembered as a good human being for a long time to come. The values she had were so vital for good life but are really difficult to adopt. To me, she'll always be an epitome of a loving daughter, a responsible daughter-in-law, a supporting wife and most importantly, a perfect mother who brought up her children on the strongest values of humane life.

Her Father-in-law, Justice J.P.Jain, had a great impact on her and she admired him greatly. His untimely death in 1975 left her shocked but she maintained her composure all through the tough times, looking after the family members and keeping the family together under the guidance of her respected Mother-in-law.

I am sure that Aruna's holy soul lives on in Gaurav and Garima and will continue to inspire her family to try to live a life worth remembering, like she did, and guide them all to lead a better future. Aruna deserves great respect from not only family members, but from outsiders as well for her hard work, fairness, compassion and commitment.

I pay my sincere and affectionate tribute to the everlasting memory of Dear Aruna.

Sheela Vishesh Bhargava

A Pious Lady Possessed Immense Humanity



It's often said that a house is built of bricks and mortar and it's only a noble wife who makes it a home. This is very much true in the case of Madam (Late) Aruna Jain, the wife of N.K.Jain, who was Judge of Madras High court for two years and eventually became the Chief Justice of this prestigious chartered High court and continued as such for another two years until he was transferred to Karnataka High court as its chief justice. During the tenure of Hon'ble Justice N.K.Jain I had the privilege of serving as Member- secretary of the State Legal Services Authority of which Justice N.K.Jain was the patron-in-chief. I formed part of the team of officials assisting the Hon'ble Chief Justice.

Madam Aruna Jain was an embodiment of compassion, courtesy and kindness and every visitor was extended utmost hospitality by her. Any person at any time would be greeted with snacks and Tea along with a glass of coconut water. Madam was never egoistic and was extremely simple, unassuming and self-effacing. She had travelled along with Justice N.K. Jain throughout the length and breadth of the state in connection with opening of new courts, and inspection of courts etc. She exhibited utmost curiosity to know about the history of different places. Madam was a great host indeed. As a matter of fact whenever a party had to be arranged, say ,in case of transfer of a judge or retirement, Madam preferred to arrange such parties in the lawns of the residence of the Chief Justice rather than in a hotel. Thus, there used to be her personal touch in extending hospitality to everyone.

Madam was extremely pious and altruistic and possessed immense humanity and innumerable people were the beneficiaries of her great virtues. The proverbial saying is that behind every successful man there is a woman and in the case of Hon'ble Justice N.K. Jain, doubtlessly it's Madam Aruna Jain who stood by him through thick and thin in the vicissitudes of life, while sealing great heights in the judicial hierarchy. She is no more now, it is an irreparable loss to her loving and affectionate husband Justice N.K. Jain and to all of us. May her soul rest in eternal peace.

S. F. Akbar

District Judge (Retd.) and Former State Information Commissioner
Tamil Nadu Information Commission, Chennai

God Fearing with Pious Nature



It is with immense pride that I am writing a few lines about Mrs. Aruna, wife of the Hon'ble Mr. Justice N. K. Jain, the then Chief Justice of the High Court of Madras and Karnataka (Retired).

I had the proud privilege to be associated with this noble family from the year 1997 or so when His Lordship assumed office as Judge of Madras High Court, as I was Deputy Registrar then. Madam was very kind and talented, but simple, kind hearted and always willing to help everyone who sought help from her. She was very God fearing, soft spoken and quiet, but a great cook. She gave proper advice to those who sought for it and treated all staff members like a family. She was well known for her austerity and pious nature, as ordained by Lord Mahavira.

I did not ever see Madam in anger. She had fun loving ever smiling Godly face. I have the good fortune of accompanying them in almost all trips-religious or sight seeing viz. Sharavanabalegola, Sabarimala, Guruvayur, Tirumalal Tirupati, Kalahasthi, Madurai Meenakshi, Palani, Tiruchendur, Shiringari and Kanchipuram Math etc., the list is endless. Almost all major temples in South India had been visited by Madam. However, God had snatched Madam when she was in her early seventies though she had no serious health problems earlier. May her soul rest in piece.

V.Vijayan, BAML

Registrar Administration (Retired)

Working as Additional Master,

High Court of Madras



It's fine to celebrate success
but it is more important to heed
the lessons of failure - **Bill Gates**



Tribute to Mrs. Aruna Jain



In our lives we come across many people but there are very few who leave everlasting impression in our lives. My life is also filled with sweet memories of few such loving and humble people. I am deeply touched on being asked to pen down my memories associated with Madam Mrs. Aruna Jain.

During His Lordship Justice N. K. Jain's tenure in Bengaluru as Chief Justice of High Court of Karnataka for three years, I was posted to work as his Private Secretary in Home Office and as such got associated with Madam.

During those days though, I used to go to office to attend my work but I was always made to feel at home and was treated as one of their family members. Madam was very caring and kind to all the staff in home office.

She had the zeal for learning and showed enthusiasm in working on computer and learning the internet technology and made notes, browsed mail, sent e-greetings etc.

She also loved cooking and used to prepare delicious Rajasthani sweets and other dishes. Though there were cooks in the residence, she used to cook lunch for Lordship. She also prepared special dishes for parties and festivals.

She was a very pious lady and a very good human being. My daughter always called her 'Nani maa'. We miss her very much.

May her soul rest in peace.



S.Noorunnisa Begum
Assistant Registrar
cum P.S. to Hon'ble Chief Justice,
High Court of Karnataka, Bengaluru.

Aruna with
Home Staff

मेरी प्रिय देवरानी



श्रीमती अरुणा के पिता श्री लक्ष्मी चंद जी, इंजीनियर साहब आगरा में धूलियागंज में हमारे दादाजी मुनीम श्री रतन लाल जी साहब के पास ही रहते थे। मेरी बड़ी बहन कमल का विवाह माननीय जज साहब के बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद जी के पुत्र डॉ. टी.पी.जैन से हुआ और मेरा विवाह भी उनके छोटे भाई स्व. शान्ति प्रसाद जी जैन के साथ हुआ।

इस तरह अरुणा के विवाह के पहले से ही हम इंजीनियर साहब के परिवार को खूब अच्छी तरह जानते थे। धूलियागंज के जैन मंदिर में भी अक्सर आपस में अरुणा की मम्मी लक्ष्मी देवी जी से मिलना होता रहता था। उनका परिवार प्रतिष्ठित व उच्च संस्कारों वाला परिवार था।

प्रभु की असीम कृपा से मेरे चचीया ससुर न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जी जैन के बड़े पुत्र नगेन्द्र का विवाह अरुणा पुत्री लक्ष्मीचंद जी से आगरा में सन् 1968 में हुआ। अरुणा बहुत खुशमिजाज, हंसमुख, शालीन, सभी की इज्जत करने वाली महिला थी। वह साफ-सफाई पसन्द, अपना काम अपने आप करने वाली, हर चीज को जगह पर रखने वाली, खाना बनाने व खिलाने में खुशी महसूस करने वाली, बुद्धिमान एवं संतोषी महिला थी। सौभाग्य से वे मेरी प्रिय देवरानी बनी।

अरुणा जी बहुत पढ़ी-लिखी थी। कई डिग्रियां थीं उनके पास। अरुणा को शुरू में ही नौकरी मिली, परन्तु उसने बच्चों की जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए नौकरी नहीं की। अरुणा जी ने घर में बड़ी बहू होने के कारण अपनी जिम्मेदारी समझ कर अपनी सोच उसी तरह की बनाई। जिस तरह से हमारी बड़ी भाभी जी श्रीमती ज्योति प्रसाद जैन ने अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाई और सबको एक सूत्र में बांधे रखा, उसी तरह इतनी पढ़ी-लिखी होने के बावजूद अरुणा ने अपने परिवार का हित सबसे ऊपर रखा।

उनके ससुर जी न्यायमूर्ति जे.पी.जैन साहब का 17 सितम्बर, 1975 को अकस्मात् निधन हो जाने के बाद अरुणा ने अपने परिवार को आगे बढ़ाने और एकता के सूत्र में बांधे रखने का बीड़ा उठाया। इस हेतु पूरा सहयोग अपनी सास (चाचीजी) को दिया। बड़ी भाभी होने का पूरा कर्तव्य निभाया। सबके घर बसे, तीन देवरानियां शादी होकर आईं, गौरव, गरिमा दोनों बच्चों की शादी की, परिवार बढ़ता रहा, आज भी सारा परिवार प्रेमपूर्वक एक छत के नीचे रह रहा है। अरुणा का अकस्मात् निधन 11 जनवरी, 2017 को हुआ। आज मैं इस अवसर पर अपनी देवरानी को नमन् करती हूँ और उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ।

सुशीला जैन
दिलशाद गार्डन, 26ए, जे. एण्ड के. पॉकेट, दिल्ली

थत् थत् नमन



बहिन अरुणा का जन्म जगाधरी (पजांब) के एक प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। उनकी पढ़ाई आगरा में हुई। जब वो धूलियागंज आगरा में रहते थे, तभी से इनके भ्राता ध्रुपद मेरे अभिन्न मित्र रहे हैं, इसी कारण इस परिवार से मेरे गत् 60 वर्षों से निरन्तर सम्बन्ध चले आ रहे हैं। बहिन अरुणा एक कुशाग्र बुद्धि छात्रा थी, उन्होंने एम.ए., हिन्दी व समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर करने के बाद बी.एड. की।

बहिन अरुणा बचपन से ही हंसमुख, विनम्र, दृढ़ प्रतिज्ञ और धैर्य रखने वाली महिला थी। सुन्दर होने के कारण बचपन में धूलियागंज मन्दिर एवं समाज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनको भारतमाता का रोल करने का अवसर मिला। विवाह का समय आया तो इनका मन एडवोकेट से शादी करने का नहीं था, लेकिन होनी को कौन टाल सकता है? जीजाजी (नगोन्द्र जी) उस समय जोधपुर हाईकोर्ट में वकालत कर रहे थे और उनके आदरणीय पिताजी हाई कोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता थे।

अपने बहन-भाइयों की शादी में सम्मिलित होने के अलावा वे हर साल आगरा आती थीं। वे अपनी पूजनीय सास, ननदों व देवरों की तारीफ करने के अलावा अपने आदरणीय ससुर न्यायमूर्ति श्री जे. पी. जैन साहब को अपना प्रेरणा स्रोत मानती थीं। आदरणीय जज साहब भी कहते थे कि इंजीनियर साहब, आपकी बच्ची बहुत सुशील, समझदार व व्यवहार कुशल है। इनकी शादी के बाद इनकी ननदों की शादियों में मुझे जोधपुर जाने का कई बार मौका मिला। इसी कारण जोधपुर व आस-पास की जगह घूमने का अवसर मिला, जो यादगार रहा।

वकील साहब से विवाह के पश्चात बहिन अरुणा ने जीवनपर्यन्त सम्पूर्ण विधाओं से परिपूर्ण व्यवहारिक पत्नी, माँ, बहू बनकर समर्पणभाव से जीवन जिया। न्यायमूर्ति श्री नगोन्द्र जी जब हाईकोर्ट में न्यायमूर्ति एवं फिर मुख्य न्यायाधीश बने तो बहिन अरुणा ने गरिमा और व्यवहारिकता की कला में परिपक्वता हासिल कर ली। उस दौरान उन्हें विभिन्न राज्यपालों, न्यायमूर्तियों व विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने का अवसर भी मिला।

अरुणा ने हर छोटे-बड़े सभी से स्नेह, प्यार और समभाव रखा। मुझसे विशेष लगाव था। मैंने अरुणा बहिन जी का बचपन, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और अन्तिम समय देखा है। वह हंसमुख, सहज स्वभाव, विनम्र, संवेदनशील, संतोषी, मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत महिला थी।

उनके निधन को एक वर्ष हो गया है। प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये मैं जीजाजी (न्यायमूर्ति नगोन्द्र जी) को साधुवाद देकर शीश नवाता हूँ कि उन्होंने बहिन अरुणा की यादों को संजोये रखने हेतु जो बीड़ा उठाया है वह जारी रहे। उनकी यादों को हम इसी तरह संजोते रहें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—भाई रमेश

दिगम्बर जैन ज्योति मासिक पत्रिका (माह - फरवरी, 2017)

पत्रिका के आजीवन सदस्य श्रीमान् नगोन्द्र कुमार जी जैन, पूर्व मुख्य न्यायाधीश मद्रास एवं कर्नाटक हाईकोर्ट, पूर्व अध्यक्ष मानव अधिकार आयोग, हिमाचल प्रदेश एवं राजस्थान, पूर्व अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी एवं अध्यक्ष बजाज बाल मन्दिर, जयपुर की धर्मपत्नी श्रीमती अरुणा जैन के आकस्मिक निधन के समाचार से पत्रिका परिवार को अत्यन्त आघात पहुँचा है। पत्रिका परिवार भगवान महावीर से उनकी पवित्र आत्मा को शान्ति एवं परिवार को संकट सहन करने की शक्ति प्रदान करने की वंदना करता है। प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक।

हमारी प्रेरणास्रोत



ईश्वर की कृपा रही कि मेरा विवाह प्रसिद्ध संस्कारी एवं जैन धर्म के अनुयायी परिवार में हुआ। मेरी पूजनीय सासु मां की अनुपम छवि मेरे हृदय व मस्तिष्क में विराजमान है। वे मेरी मां ही नहीं आध्यात्मिक व व्यवहारिक सलाहकार, शिक्षक और दार्शनिक भी थीं। उनके गुणों का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है।

मैं एक मध्यम परिवार से सन् 23 जनवरी, 1998 में विवाहित होकर इस परिवार में अपनी सासु मां के चरणों में आई। उसके बाद उनका एवं अन्य परिवार जनों का स्नेह एवं वात्सल्यपूर्ण व्यवहार एवं सभी बातों को प्रेम से समझाना मेरे लिये अनोखा अनुभव था। आदरणीय सासु माँ में सबकुछ आखों से ही बोलने की कला थी। यह ट्रेनिंग मेरे लिए वरदान साबित हुई। हर क्षेत्र में वे विलक्षण प्रतिभा रखती थीं। रिश्तों को प्रेम भाव से निभाना उनको अच्छी तरह आता था। इस कारण उन्हें सामाजिक क्षेत्र में व्यापक आदर प्राप्त था।

उनका प्यार इस बात से महसूस होता है कि उन्होंने मेरी भावनाओं को समझकर, शादी के बाद मुझे अपनी सर्विस जारी रखने की स्वतंत्रता दी एवं सभी जगह आने-जाने की पूर्ण आजादी प्रदान की।

उनमें अनुशासन, सहनशीलता, प्रेम व वात्सल्य भाव होने के साथ-साथ वे एक शान्त एवं निर्मल मन की महिला थी। वह समय की पाबन्दी, मेहमान व पारिवारिक सदस्यों का आदर-सत्कार करने आदि के गुणों से सम्पन्न थीं। उनके इन्हीं गुणों का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा, मैं इसके लिए उनकी आजन्म कृतज्ञ रहूँगी।

उनको व्यजन बनाने का शौक था, उन्होंने ही मुझे इस कार्य में निपुण किया। सभी देवर देवरानियों व अन्य रिश्तेदारों से उनका प्रेम पूर्ण व्यवहार था। सभी सदस्य उनसे सलाह-मशविरा कर आगे बढ़ते थे। पोता-पोती, मुदित-तान्या में अनुशासन में रहने के तौर तरीकों के साथ उनके लालन-पालन और विकास में उनका महान योगदान है।

मैं यह भी कहना चाहूँगी कि मेरे दादा ससुर आदरणीय न्यायाधिपति स्व. जे. पी. जैन साहब की शताब्दी वर्ष के अवसर पर मेरे आदरणीय ससुर साहब ने नवम्बर, 2017 में उनकी यादों को संजोये रखने के लिए एक पुस्तक का लोकार्पण किया व अब सासु जी की याद में पुस्तक निकाल रहे हैं जिससे परिवार के दोस्तों व परिवारजनों को उनकी अच्छी बातों से प्रेरणा मिल सके।

मेरी सासु माँ का निधन सब परिवारजनों के लिए व खास तौर से मेरे लिए एक ऐसी क्षति है, जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती। उनका मेरे व्यक्तित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके चरणों में शत-शत प्रणाम।

सानू जैन

A Lady of Principles



I had an opportunity to meet Nagendra Bhai Sahib through my friend late Shri P. L. Agarwal, Advocate at Bar Association, Gangapur City while he was contesting the election of Bar Council of Rajasthan 1980.

Subsequently I started practice in the year 1983 at Rajasthan High Court Bench, Jaipur and since then I have been in contact with Mr. Nagendra Kumar

Jain Sahib.

During this period I visited his house at Jaipur and met Bhabhiji Late Smt. Aruna Jain several times. She was kind hearted, and was a religious and pious lady. After elevation of Mr. N. K. Jain as judge of Rajasthan High Court, I also went to Jodhpur and had an occasion to visit his house. The nature of Bhabhi was same as I had seen in the year 1983 and thereafter in spite of being wife of High Court Judge she did not reveal any proud. She was soft by nature and performed all her duties as an ordinary lady.

When Justice N. K. Jain was transferred from Rajasthan to Chennai (Madras) I and Mr. G. S. Bapna (Ex. Advocate General Rajasthan) at one occasion had to stay at his house in Madras. We were looked after by respected Bhabhiji with so much hospitality that cannot be described in words. Later on Justice N.K. Jain was transferred as Chief Justice of Karnataka High Court. In spite of being the wife of Chief Justice, she continued to be a very simple and proud less lady.

Justice N.K. Jain was the elder son of Late Justice J.P. Jain sahib, the respected Bhabhiji therefore preformed all the duties as an elder member of the family. She also organised all the functions required to be performed on all occasions. She treated all her Nanads and Devars, equally and never discriminated amongst them. She played a great role in uniting the entire family. We can never forget her because of her good qualities. She was a lady of principles. It will be a great tribute to her if we follow her principles.

Jinesh Jain
Advocate

A great lady and a superb human being



I am delighted to write my sweet memories about Aruna Bhabhi. I have been in touch with her since her marriage as Nagendra Bhai Sahib and Jeetu Sahib were thick friends ever since they started practice.

Bhabhi was very simple, humble and unassuming. She never talked ill of any one. She always extended helping hand to every one. She had been wife of a Judge and chief Justice but she never showed any air in her behaviour. She remained as she was earlier

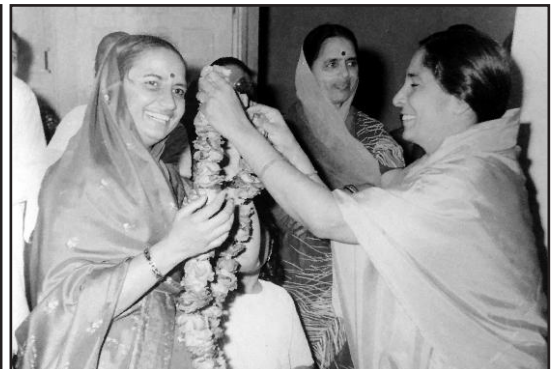
before Bhai Sahib's elevation.

We had a group of five namely Nagendra Bhai Sab, Late R K Kala Sahib, Abhay Bhandari Sahib, R M Lodha Sahib, G.S. Bapna and Jeetu Sahib.

We used to meet frequently with family. The group used to be known as Defaulters' Club. Bhabhi, Sudha, Raj Kumari Bhabhi, Mona Bhabhi, Manju and my self had good time together for a number of years. The group ended with elevation of Nagendra Bhai Sahib and R. M. Lodha Sahib. We had very nice time together.

She was such a great lady and a superb human being, which is a rare specie in these days of pomp and show. She left for heavenly abode very early, after her brave fight with life on 11.1.2017. I miss her company. That Bhabhi's soul was pious is amply proved from the fact that I got the idea of writing tributes for her while sitting in Dada Guruji Temple in Malpura. This rarely happens. I pay my affectionate and lovely profound tributes to her and regards to the great soul.

Asha Singhi



Sweet Old memories of defaulters Club with Aruna- Mrs. R.K. Kala

In loving memory of Smt. Aruna Jain



Family of late Justice J.P. Jain and Justice N. K. Jain was known to our family and to me from decades. His wife Aruna Bhabhi was a kind and charismatic lady and was a great source of inspiration and it is her dedication towards her aims and objects in life that made Mr. Jain achieve great heights in his life.

She was a pillar of strength in his life which made him to taste to success of life as he rose to the chair as Chief Justice of Chennai and Karnataka High Court. He worked as chairperson Human Rights Commission Himachal Pradersh & in Rajasthan also. I always remember Aruna Bhabhi as smiling and cheerful lady. She motivated the people around her in achieving their goals in life and giving their life a direction and motivation.

Justice Jain, now by releasing this book containing memories & tributes by distinguished persons with some photographs clearly reveals that she is still in his mind and heart. This gesture shows his love and affection towards Aruna Bhabhi and proves that he is a true, worthy sincere and an honest husband.

Sadly, Aruna Bhabhi is no more in this world but her presence can never be more than a thought away. She will always be in our mind and forever be in our heart.

I pray to lord that her soul may remain in peace.

Pradeep Kumar Kasliwal



The real measure of a man is shown by
his power of resistance, the point at
which one's courage breaks.



Homage to My Mother-in-Law



Smt. Aruna Jain, my mother in law, was the most amazing woman. I am blessed to have a second mom in my mother-in-law. She loved me like I was her own child which made me feel like one of the luckiest sons-in-law in the world. She and I had a special bonding. She was a lady of principles and was definitely an instrument in shaping the life of my father in law. With all the greatness achieved by her husband, she was always humble and God fearing. My father-in-law was regularly organizing programmes in the memory of his father Late Justice

J. P. Jain for last so many years by way of giving trophies, prizes to upcoming Badminton players etc. He also organized eye operation (Cataract Surgery) camp at Chennai, publication of small books for legal awareness, providing artificial aids, appliances, sewing machines to poor and needy ones. In centenary year he organized a free medical camp, and also provided Jaipur Foot and released a book. Now this book clearly reveals that she is still in his mind and heart. This noble gesture shows his love and affection towards her and proves that he is a true, worthy and an honest husband.

When I see kids Garima and Gaurav, I see the indelible imprint of her personality in them. They are people of character and integrity. They have same compassion, tenderheartedness and love as possessed by her. She was a brilliant & wonderful cook and made some really delicious recipes and some were patented by her. Only she could make such fine dishes. She was a warm, kind, loving, caring, supportive, smart lady apart from being an avid reader.

She was a person I turned to when I had questions about life. Not only was she an amazing mom, but she was also an amazing grandmother to her grand kids. My both kids Tanmay & Aaryan have always praised their wonderful Nani. She was always very affectionate to them.

I got a WONDERFUL mom in her — She affirmed and encouraged the values and principles. She will always remain in our hearts....

Nitin Jain

My Loving Dadi

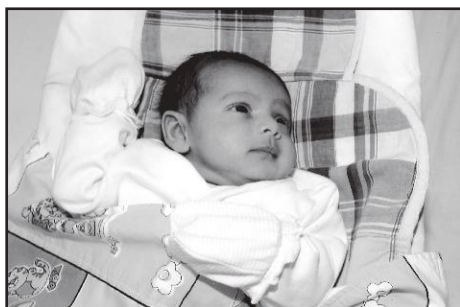


My Dadi was an angel for me. When I was born she took me in her arms and said that you are my little shallu.

I could not follow, what she is saying at that time. But now I know that emotion because my face resembles with my Shallu Bua. On my first birthday she helped me to cut my birthday cake and gave me so much blessings with lots of kisses on my forehead.

In this way she celebrated my all birthdays and blessed me and every time she gave me different types of gifts. We also celebrated Dadi's birthday and enjoyed party with gifts. When she was not well, at that time we celebrated her marriage anniversary on 24th November 2016. She always loved me. I miss my Dadi too much. I Love you Dadi.

Today also I feel her blessings are with me. I may also express thanks to all respected and eminent persons, who gave tributes to my loving Dadi. I have no words to express my sincere gratitude to all of them for their kindness and concern.

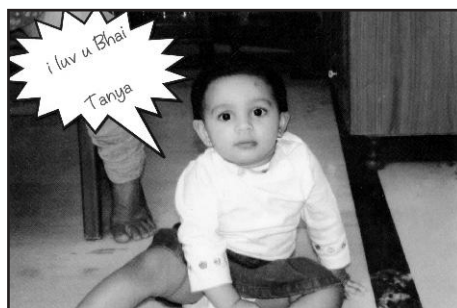


Tanya Jain
4th Class
MGD School

Tanya



Tanya-Mudit



Tanya

‘स्मृति शेष’ स्वर्गीय न्यायाधीश जगदीश प्रसाद जैन को हार्दिक श्रद्धांजलि

स्वर्गीय न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जैन के शताब्दि वर्ष पर उनके पुत्र नगेन्द्र कुमार जैन ने एक स्मृति स्मारिका का प्रकाशन किया है। स्वर्गीय न्यायमूर्ति जगदीश प्रसाद जैन ने निरन्तर विद्यार्थियों के सशक्तिकरण व श्री महावीरजी की सथायात्रा की मान्यता के सतत प्रयास अपने जीवन काल में किये जिसे समाज आज भी स्मरण करता है।

भारत का आदर्श सत्यमेव जयते रहा है। यह आदर्श वाक्य प्रत्येक न्यायाधीश की सीट के पीछे दीवार पर दृष्ट्यव्यवस्था होता रहा है। अहिंसा परमोधर्म के अनुयायी दिगम्बर श्वेताम्बर जैन समाज में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया है जो अपने जीवन काल में महावीर के सत्य अहिंसा सिद्धान्त के अनुरूप आचरण करते हुए स्वयं को लोकप्रिय बना गये हैं। स्वर्गीय न्यायाधीश जगदीश प्रसाद जैन भी उन चुनिन्दा सत्यमेव जयते के साधकों में से एक हैं जिन्होंने सदैव कर्तव्यनिष्ठा व समर्पण भावना का परिचय देते हुए समाज में समता, उदारता, सौहार्दता, संवेदनशीलता जैसे गुणों पर आचरण किया है। अपनी विनयशीलता

विश्वसनीयता व करुणामय भावना पर आचरण करते हुए समाज के शोषित पिछड़े वर्ग को न्याय दिलाने व ऊंचा उठाने का कार्य किया है।

अपने न्यायिक कार्यकाल में उन्होंने विद्यार्थियों के लिए संवर्ष किया। राजस्थान बार काउन्सिल जोधपुर के 1954 से 1961 तक सदस्य रहे। 1956 से 1970 के बीच अनुशासन समिति के अध्यक्ष रहे और 1965 से 1968 तक राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। स्वर्गीय न्यायाधीश जैन अलवर जैन मन्दिर के अध्यक्ष व जोधपुर जैन मन्दिर के अध्यक्ष रहे।

कर्मके वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन
मा कर्मफल हेतु भूमां ते संगोऽस्त कर्मणो

के जीवन पर्यन्त साधक रहे हैं। स्वर्गीय जगदीश प्रसाद जैन के व्यक्तित्व को प्रशंसा करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एम.एन.वेकट चलेया ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वर्गीय न्यायाधीश जगदीश प्रसाद जैन का व्यक्तित्व देश के न्याय



जगत के लिए अनुकरणीय है। न्यायाधीश एआर लक्ष्मनन, न्यायाधीश अशोक कुमार माथुर, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश दलवीर भन्डारी स्वर्गीय

न्यायाधीश जैन को निष्पक्षता की शक्ति बताया है। उन्होंने कहा कि एक ग्रेट जज के साथ ही वे ग्रेट सिटीजन भी थे। सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश टीएस ठाकुर ने कहा कि उनको हालांकि न्यायाधीश जैन के साथ कार्य करने का अवसर नहीं मिला लेकिन वे विशिष्ट योग्यता वाले न्यायाधीश थे जिन्हें आज भी समाज व न्याय समुदाय के द्वारा स्मरण किया जाता है। राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश पीएन सिंहल ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए न्यायाधीश जैन का निधन उनके लिए निजी हार्ति है।

न्यायाधीश एनएम कासलीवाल, न्यायाधीश शिवराज जी पाटिल, डॉ. न्यायाधीश एआर लक्ष्मनन, न्यायाधीश अशोक कुमार माथुर, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश जीएस सिंचिवी, न्यायाधीश

एनएल टिवरेवाल, न्यायाधीश एसएन भार्गव, न्यायाधीश वाईआर मोना, न्यायाधीश वीएस दत्ते, न्यायाधीश पानाचन्द जैन, न्यायाधीश आईएस ईसरानी, न्यायाधीश वीआर अरोड़ा, न्यायमूर्ति राजेन्द्र सक्सेना ने स्वर्गीय न्यायाधीश जगदीश प्रसाद जैन के जीवन व न्यायप्रियता को लेकर उन्हें स्मरण किया है।

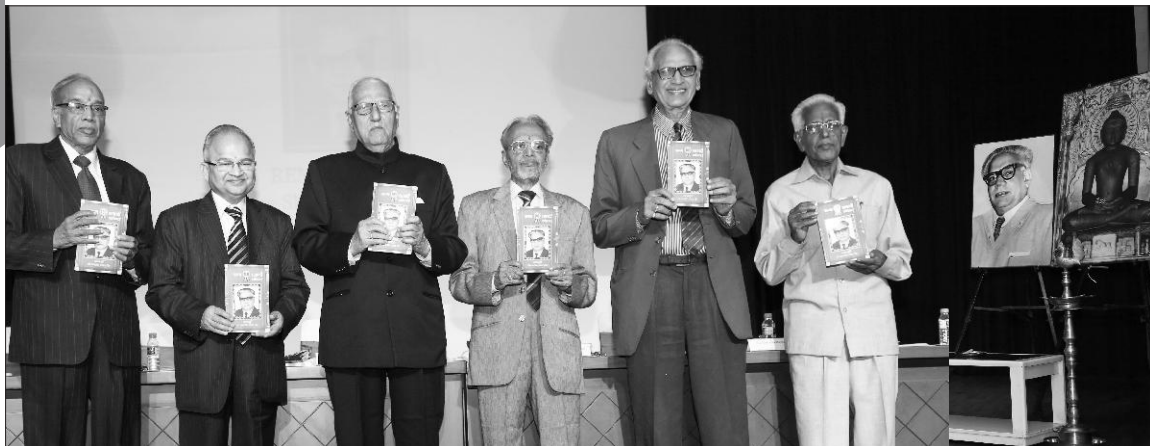
वरिष्ठ एडवोकेट सागरमल मेहता, वरिष्ठ एडवोकेट एनएम रांका, वरिष्ठ एडवोकेट जे.के.सिंघी, वरिष्ठ एडवोकेट अभय कुमार भन्डारी, एडवोकेट मोहन लाल पंवार, एडवोकेट प्रकाश चन्द जैन, एडवोकेट सीताराम जोशी ने स्वर्गीय न्यायाधीश जैन के साथ अपने संस्मरण को साझा किया है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री, डॉ. प्रतिभा एस भार्गव डायना कापेन, गोपीकृष्ण सिद्धा, नरेन्द्र कुमार कौशिक, डॉ. टीपी जैन, ए.पी.जैन, देवेन्द्र कुमार जैन उनकी पुत्री श्रीमती सरोज जैन "जौहरी", मीना घोषा, डॉ. वीणा जैन, डॉ. अरुण जैन, अशोक जैन ने भी उन्हें स्मरण किया है।

- कार्यालय संवाददाता



Justice M.N. Venkatachalliah



CENTENARY BIRTH YEAR OF LATE SHRI JUSTICE J.P. JAIN

On the occasion of J.P. Jain's Birthday, their children Justice N.K. Jain, Dr. Arun Jain and Ashok Jain launch Bookbirth Centenary Year 2017, on 26th November, 2017, Sunday. Justice Jagdish Prasad Jain's Career was illustrious and impressive from a small village palm to the High Court at Jodhpur. Justice J.P. Jain journey was marked throughout by one special trait of his personality, namely, his simplicity as a human being and his love and concern for everyone who came within the orbit of his moral influence. These writing bring out Justice Jain as a warm, affectionate and kind hearted person yet an highly principled.

JUSTICE NAGENDRA KUMAR JAIN

With the Blessings of Acharya Shri Vidhya Nand Ji Muniraj, who had blessed me, for this noble gesture, with immense pleasure. I present this souvenir book, to this august gathering on the birth centenary year of my father late Justice J. P. Jain, to perpetuate, his loving memory which is evergreen in my heart.

This function is not merely a felicitation of my father's centenary year but it projects the Indian treasure, which lies in its old civilization, admired by European and other countries for the love, affection and reverence we have towards each other, despite of many barriers. We have inherited these qualities, which is a part of our culture and from our elderly members. We are thankful to them and we should adopt and preserve them and encourage younger generation to follow the footsteps of our elders.

I am fortunate that I was born and brought up in such a family. My parents were followers of Jain Principles and not in rituals only. My father was a sportsman, state forward and a disciplined person and held in good esteem. He never believed in the policy of appeasement and bereft of any sort of hypocrisy in life.

My father had so many good qualities; a few of them are simplicity, integrity, fairness, compassion, commitment, passion for work, to treat every body alike, therefore he was a good human being as well. He also advised us to discharge our duties with sincerity and also to behave with others in the same manner as we expect others, to behave, with us. I have tried to imbibe these qualities, in my life. By the grace of God, blessings of my parents and good wishes of you all. I could perform my duties, as per my conscious and to my full satisfaction in various capacities.

My father had amiable personality and because of it, whosoever met him could not forget him in his life. To maintain the position of my father,

my pious and contended mother helped and sacrificed at all stages.

I and my family members have no words, to express my sincere thanks to the Former Hon'ble Chief Justice of India, Justice M. N. Venkatachaliah, Padmavibhushan, who is well known for his humbleness, grace and hard work for passing foreword note of this book. We all express our gratitude to other distinguished Judges namely Justice Dalveer Bhandari, Judge, International Court of Justice, Padmabhushan, Justice T. S. Thakur, Former Chief Justice of India and Judges of Hon'ble Supreme Court and High Court, Senior Advocates and family friends. Who have faith in preservation, maintenance and furtherance of rule of law for their concern and sending their recollections and reminiscences.

My father, and, his advice still lives in my mind, reminding at all times, that you should stay true to your self. And "be happy and do not expect any from anybody and do not provoke anyone so that your heart be not troubled by anybody." I have always strived to follow the path shown by him.

My cousin brother Mitsren and my wife Aruna were keen to celebrate birth centenary of my father in year 2017. But unfortunately they are not there in person.

I am also thankful to Shri M. L. Dhokriya, who inspired me to bring out this book, on the occasion of my father's 100th birthday, which may inspire the coming generations. Further, I thank Sandeep Shah of Raju Graphic Art, Dr. Chandrika Prasad, K. K. Mittal, Tarun, Veersain, Amarchand, Chetan and others who relentlessly worked to bring out this book in a short time.

I hope, the younger generation will take advantage of my father's ideals by adopting them in their life to get all round success. Sadar Naman.

N. K. Jain





न्यायामूर्ति एन.के. जैन



स्व. श्रीमती अरुणा जैन



मुदित जैन



तान्या जैन



गौरव जैन



श्रीमती सोनू जैन



निर्मल कुमार एवं रुकमणी देवी



गरिमा जैन



श्री नितिन जैन



नवल कुमार-नीना जी जैन एवं
गर्वनर श्री बलिराम भगत

Sweet Memories

Aruna with Dadi, Bua, Amma, Papa, Aunty, Relative & Family, Judges and Judge's Wives





◀ Aruna Amma & Family



▲ Tanmay with Grand Pa & Mom

▲ Aruna with Aaditya



◀ Mudit



▲ Aruna, Tanmay and Family



◀ Aruna & family



▶ Mrs. Garima - Nitin, Tanmay and Aryan Jain

▶ Aruna
Dr. Gautam &
Dr. Veena's Family



Aruna
Dr. Aunty & Family ▶





Aruna's brothers, sister & family members at Patnitop



Aruna with Mrs. & Mr. Ajay
& Family Mysore

Amma Pushpa & Aunty Dr. B. Joseph



Aruna with Family Members at Jodhpur



Aruna, Dr. Arun & Family



Aruna with Pitaji-Amma
& Family Members



Family members of Aruna and family at Jaipur



Aruna with Abhishek - Sneha's marriage & family at Jaipur



Aruna with Justice Kanta Bhatnagar, Justice Mohini Kapoor & Judges Wives 1990



Aruna with Justice Kanta Bhatnagar, Mrs. Agarwal & Other Judges Wives



Aruna with CJ Justice K.C. Agrawal, Judges & Wives of Other Judges, Jodhpur



Aruna with Governor, Justice Fatima Bibi & Tamilnadu CM Karunanidhi at Madras



Aruna with MK Stalin, Judges, Ministers and Friends at Madras



After Oath as CJ at Madras



Aruna with Governor Justice Fatima Bibi
Inauguration of Exhibition at Madras



Aruna with wives fo other judges at a function in Neyveli



Aruna in a Court Function at Tirukoilur



Audience in Functions



Aruna with Justice Meena Kumari, Justice Subbalaxmi & Justice Prabha Sridevan



Aruna with Chief Justice of Allahbad HC, Justice Sripukar & Justice Kalifulla



Aruna felicitating Justice N. Santosh Hegde (Judge Supreme Court)



Aruna with Governor Rama Devi & Judges Wives



Aruna with Governor Ramadevi, Friends & Family Members at Rajbhawan Bangaluru



Aruna with CM S.M. Krishna & Governor Ramadevi, with Friends & Family in Bangaluru



Aruna at Temple



Aruna at a religious function in a temple



Aruna at a temple with judges and devotees



Aruna at 24 Maharaj Temple at Shravanabelagola



Aruna at Jakhu Temple, Shimla



Aruna at temple with Justice Chandrashekaraiah and others



Aruna in procession with Shri Swami Charukirtiji at Shravanabelagola



Aruna with Shri Swami Charukirtiji in a function at Shravanabelagola

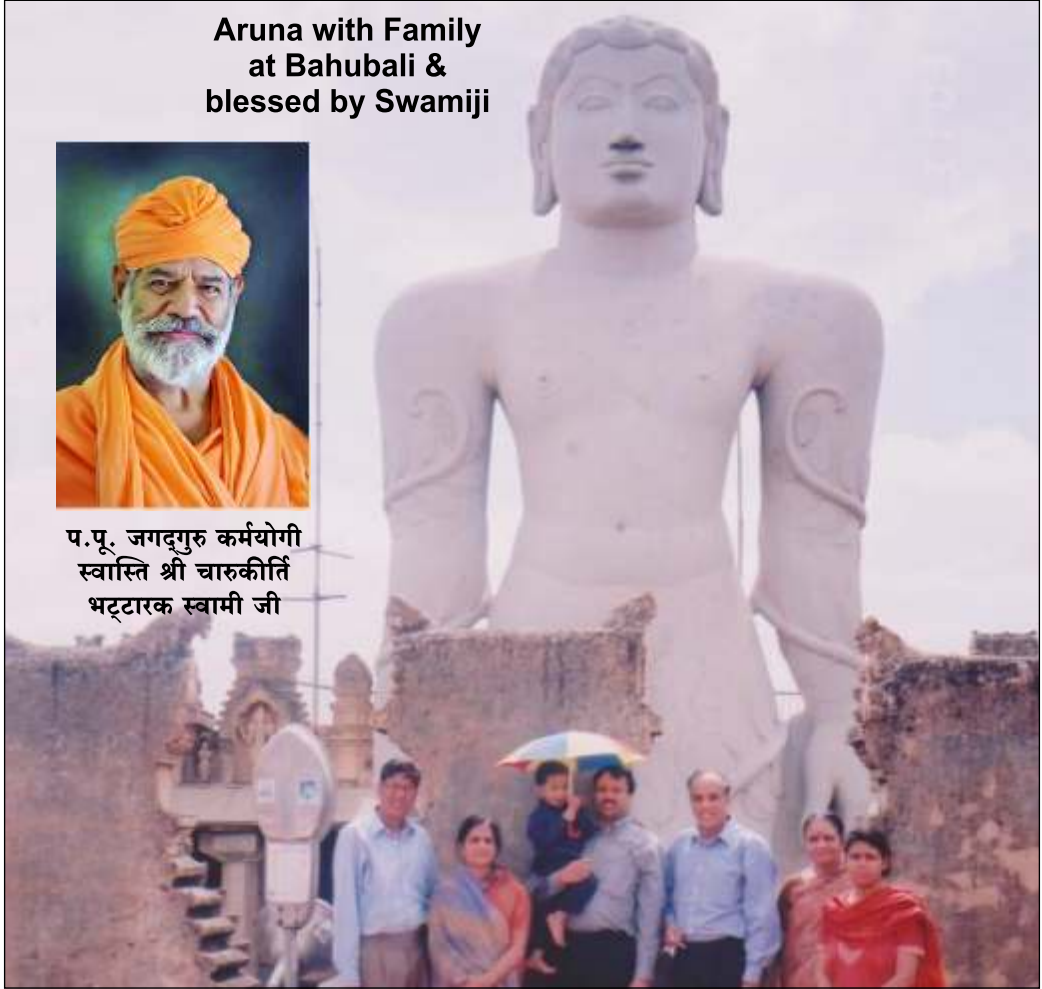


Aruna with with others dignities in a function at Shravanabelagola

**Aruna with Family
at Bahubali &
blessed by Swamiji**



प.पू. जगद्गुरु कर्मयोगी
स्वास्ति श्री चारुकीर्ति
भट्टारक स्वामी जी





Aruna being blessed at Shravanabelagola by Charukirti Bhattaraka Swami



Aruna at Temple



Aruna with Judges, Judges Wives at Bijapur



Blessing by Bhattarakji Moodabidri



Blessing from Swamiji at
Mysore Math



Blessing from Acharya Shri 108
Vidhyanandaji Muniraj at Delhi



Aruan being Blessed from Charukirti Bhattaraka Ji



Dr. Virendra Hegde honoured in presence of Acharya Vidhyanandaji
President, Saritaji & Members Kundkund Bharti



Aruna at different functions





Aruna at Flag-Hoisting Ceremony on Independence Day



Aruna at Lunch with Governor Ramadevi



Aruna is being facilitated by Secretary



Presentation - a gift to Aruna



Aruna at Bar Association function



Aruna lighting lamp in the presence of judge and minister



Aruna felicitating wife of Justice G. Patri Basvana Gaud



Aruna with judges wives in a function



Aruna with Former CJ Justice Swami, Justice Manjula Challur & Others



Aruna with Mrs. Anand, (Wife of CJI Justice Anand) and Other SC Judges



Aruna with other Judges at Rajbhawan at Madras

Aruna with Mrs. & Mr. Justice N.M. Kasliwal at Shimla



Aruna with Justice Subbalaxmi, Judge Madras High Court

**Photograph of Members of
Advocate's Ladies Club**



Mrs. Shanti Mehta, President with
Military Persons at Jodhpur Railway
Station during Indo-Pak War 1971



Distributing food at time at Pipad
1979-80



Aruna in a function with
judicial officers



Aruna with Wives of Judges
at Bangaluru



Aruna in a Function



Aruna with Minister, Judges
and Judicial Officers



Aruna at Dashaera Ground at Mysore with CM & Others



Aruna with Mrs. & Mr. Justice Sabhahit and Officers at Madkari



Aruna with Mrs. & Mr. Nawal Kumar and Family at Pehalgam



Aruna at Math with judges and member of legal fraternity



Aruna with Mrs. Chinnappa
Justice MP Chinnappa and Judges



Aruna felicitating wife of Justice
Mohammed Anwar



Aruna with Mrs. & Mr.
Justice Chandrashekariah



Aruna with Mrs. & Mr.
Justice S. Reddy



Aruna with Mrs. & Justice Rangavittalachar and Other Judges



Aruna with Mrs. & Mr. Justice Kumar Rajaratnam and Justice MF Saldanha



Aruna with Mrs. & Mr. Justice R.V. Raveendran



Aruna with Mrs. & Mr. Justice S. Reddy



Aruna felicitating Mrs. & Mr. Justice M.F. Saldanha



Aruna felicitating Mrs. & Mr. Justice G.C. Bharuka



Aruna with Mrs. & Mr. CJ Rajasthan
Justice Anil Dev Singh at Tirupati



Aruna with Mrs. & Mr.
Dharam Singh, CM Karnataka



Aruna with Mrs. Singh (W/o. Justice
Anshuman Singh Governor of Raj.)



Aruna with Mrs. Asha and
Mr. Jitendra Singhi at Bangaluru



Aruna in Function with Judges



Aruna with Office bearers



Aruna being blessed by Shardheya Tejkaran Ji Dandiya Sahib



Governor of Pondicherry Rajini Rai felicitating Aruna



Aruna with Mrs. Patil, Mr. Justice Shivraj Patil, CJ Rajasthan & Family at Jaipur



Aruna with Mrs. & Mr. Nirmal Kumar Jain Governor of Raj. & Others at Jaipur



Aruna with CJI Justice Lahoti & President Abdul Kalam at Rashtrapati Bhawan



Aruna with Governor TN Chaturvedi, Fr. CJI Justice Venkatachalaiah & Justice R. Babu CJI



Aruna with Mrs. Justice Venkatachalaiah and Mrs. Babu. BLR



Aruna with Judges and
Judicial Officers



Justice Y.R. Meena &
Governor Rajasthan Pratibha Patil



Aruna with High Court Judges & Judicial Officers



Aruna with wives of High Court Judges and Judges



Aruna being facilitated by Karnataka High Court Employees, BLR



Aruna being facilitated by Karnataka High Court staff



Karnataka High Court Staff Function



Aruna being facilitated by Karnataka High Court staff



Aruna at Function



Aruna at different tours at abroad







Aruna with Chief Justices of Different Countries - Colombo, Sri Lanka



Aruna with other delegates at a conference in Colombo, Sri Lanka



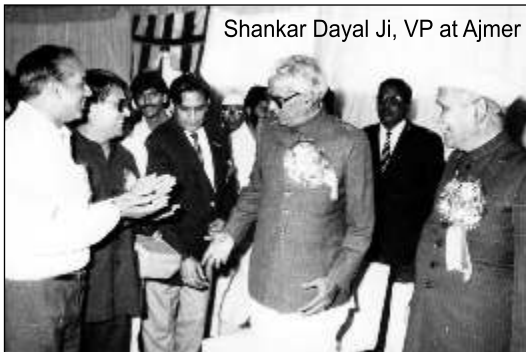
Aruna with various Chief Justices & wives in Colombo, Sri Lanka



Judge International Court & Other Judges at Shri Lanka with Aruna



Vice President with Judges at BLR



Shankar Dayal Ji, VP at Ajmer



With CJ Reddy, Madras at Singapore



Aruna with Prakash Padukone Vimal, Gopi, Aparna, Jwala & Indian Badminton Team and Players & Distribution of Prizes in different tournament.





Aruna with Indian Badminton Team at Home



Disabled Badminton World Championship Tournament



Aruna with Indian Badminton Ladies Team



Shri Prakash Padukon
Former All England Champion



Arun with Mrs. Negi (Member, State Human Right Commission, HP) at Shimla



Aruna with Mrs. & Mr. Naval Kumar's Family and Judicial Officers at Shimla



Aruna with Mrs. & Mr. Kokje Governor & Mrs. & Justice Reddy, CJ Madras



Aruna & Mrs. Kokje (Governor's Wife) felicitating each other at Raj Bhawan, Shimla



Aruna with CM Virbhadra Singh at Shimla



Farewell



Aruna with judges wives

Centenary Celebration's Photo



Justice N.M. Kasliwal addressing the distinguished audience at Indralok



Medical Camp at Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan

Centenary Celebration's Photo



Saraswati Vandana being performed by Students of Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan and Distinguished Dignities



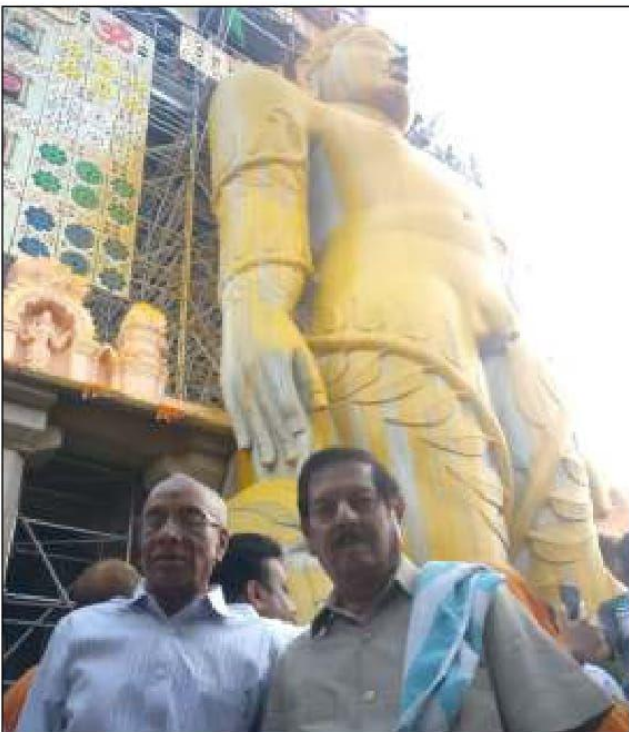
Book release at Indralok on 26th November, 2017



Mr. Arora, Mr. Justice Singhvi, Mr. Mehta, Mr. Shastri, Mr. Ranwaka & Mudit



17-18 February, 2018 - Bahubali





दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीर जी (राजस्थान)



स्व. श्रीमती अरुणा जैन
(28 जुलाई 1945-11 जनवरी, 2017)

